RNI No. RAJHIN/2013/50503

देव चेतना

हिन्दी मासिक

वर्ष : 13 | अंक : 10 | जयपुर | प्रकाशन तिथि : 5 दिसम्बर, 2025 | मूल्य : 20/- | पृष्ठ-36

देव चेतना पत्रिका के प्रेरणा स्रोत एवं प्रधान संरक्षकगण

स्व.श्री रामगोपाल गार्ड
प्रेरणा स्रोत

श्री कालूलाल गुर्जर
प्रधान संरक्षक

श्री भौंरेलाल बागड़ी
प्रधान संरक्षक

श्री सरदारसिंह चेची
प्रधान संरक्षक

श्री अशोक गार्ड
प्रधान संरक्षक

श्री पुरुषोत्तम फागणा
प्रधान संरक्षक

श्री रतनलाल चेची
प्रधान संरक्षक

श्री पृथ्वीसिंह चौहान
प्रधान संरक्षक

रामलाल गुंजल
प्रधान संरक्षक

श्री घनश्याम तंवर
प्रधान संरक्षक

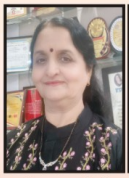
डॉ. दक्षा जोशी
प्रधान संरक्षक

डॉ. कुलदीप महुआ
प्रधान संरक्षक

श्री अमरसिंह धाभाई
प्रधान संरक्षक

श्री शैतान सिंह गुर्जर
प्रधान संरक्षक

श्री गोपाल सिंह गुर्जर
प्रधान संरक्षक

तिलकराज बैंसला
प्रधान संरक्षक

कर्नल चौ. देवेन्द्र सिंह
प्रधान संरक्षक

श्री रामजीलाल गुर्जर पटवारी
प्रधान संरक्षक

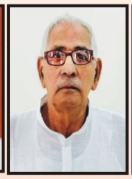
श्री इन्द्रराज विधूड़ी
प्रधान संरक्षक

श्री नानजीभाई गुर्जर
प्रधान संरक्षक

श्री कन्हैयालाल सराधना
प्रधान संरक्षक

।। श्री गुरूदेवाय नमः ।। ।। श्री गणेशाय नमः ।। ।। श्री देवनारायण नमः ।।

रजि. न. 333/99-2000

सामूहिक विवाह आयोजन समिति

गुर्जर समाज, जयपुर (राज.)

द्वारा आयोजित

परिचय सम्मेलन एवं सामूहिक विवाह

परिचय सम्मेलन एवं प्रतिभा सम्मान समारोह

रविवार, 04 जनवरी 2026

गोकुल निवास

महावीर मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर

सामूहिक विवाह सम्मेलन

गुरुवार, 19 फरवरी 2026

(फूलेरा दौज)

स्थानः दशहरा मैदान, आदर्श नगर, जयपुर

कन्हैया लाल छावड़ी	नवरतन बारवाल	लक्ष्मण लादी
अध्यक्ष	महामंत्री	कोषाध्यक्ष
मो. 8949993595	मो. 9829075075	मो. 9928897779

एवं समस्त कार्यकारिणी

देव चेतना पत्रिका के प्रेरणा स्रोत एवं प्रधान संरक्षकगण

श्री चन्द्रशेखर बसवा
प्रधान संरक्षक

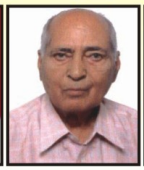
श्री अमरसिंह कसाना
प्रधान संरक्षक

श्री गोपाल धाभाई
प्रधान संरक्षक

श्री लक्ष्मणसिंह कसाना
जयपुर- प्रधान संरक्षक

श्री ब्रह्मसिंह गुर्जर
प्रधान संरक्षक

श्री शान्तिलाल गुर्जर
प्रधान संरक्षक

श्री बुद्धाराम चाड़
प्रधान संरक्षक

श्री देवनारायण लटाला
प्रधान संरक्षक

श्री पी.सी. अवाना
प्रधान संरक्षक

महन्त श्री दयालनाथजी
प्रधान संरक्षक

दामोदर गुर्जर
प्रधान संरक्षक

श्री राजेश लोमोड़ एडवोकेट
प्रधान संरक्षक

श्री विजय सिंह डोई
प्रधान संरक्षक

डॉ. रेखासिंह गुर्जर
प्रधान संरक्षक

श्री विजयसिंह कसाना
प्रधान संरक्षक

श्री जगदीश रावत
प्रधान संरक्षक

श्री चन्द्रभान अवाना
प्रधान संरक्षक

श्री लखन पटेल
प्रधान संरक्षक

मन्नालाल प्रधान
कोटा
प्रधान संरक्षक

श्री बाबूलाल छेपट
प्रधान संरक्षक

श्री सुखराम गुर्जर
प्रधान संरक्षक

श्री जगदीश गुर्जर
प्रधान संरक्षक

डॉ. अमित सिंह
प्रधान संरक्षक

श्री जगदीश भड़क
प्रधान संरक्षक

इन्द्र चन्द गुर्जर
प्रधान संरक्षक

श्री मनमोहन फागणा
प्रधान संरक्षक

श्री कन्हैयालाल छावड़ी
प्रधान संरक्षक

श्री नीरज पटेल
प्रधान संरक्षक

श्री गोविन्द गुर्जर
प्रधान संरक्षक

श्री सांवरलाल गुर्जर
प्रधान संरक्षक

श्री चेतन गुर्जर
प्रधान संरक्षक

श्री गौरीशंकर डोई
प्रधान संरक्षक

चौ. शिवपाल सिंह
प्रधान संरक्षक

विजयलाल सराधना
प्रधान संरक्षक

श्री राजेन्द्र दौराता
जयपुर- प्रधान संरक्षक

श्री अमरसिंह भगत
मिलकपुर-प्रधान संरक्षक

सत्यनारायण सेठ
दाबादेह, कोटा
प्रधान संरक्षक

श्री शंकरलाल कसाना
प्रधान संरक्षक

मेवाराम छावड़ी
प्रधान संरक्षक

फूलचन्द चेलरवाल
भैरुखेजड़ा, जयपुर
प्रधान संरक्षक

बजरंग लाल गुर्जर
जिलाध्यक्ष-झालावाड़
प्रधान संरक्षक

श्री जगजीतसिंह-स्व.श्रीमती चांद सिराधना
प्रधान संरक्षक

श्री भंवरलाल गुर्जर
प्रधान संरक्षक

श्री सूरतराम गुर्जर
प्रधान संरक्षक

श्रीमती सावित्री गुर्जर
प्रधान संरक्षक

श्री फतेहसिंह चेची
प्रधान संरक्षक

श्री धनराज गुर्जर
चेयरमैन, प्रधान संरक्षक

हलवाई श्री घीसू गुर्जर
प्रधान संरक्षक

श्री डी.एस. लोहमोड़
प्रधान संरक्षक

एडवोकेट बंशीधर गुर्जर
प्रधान संरक्षक

श्री सुरेश गुर्जर, कोटा
प्रधान संरक्षक

श्रीमती मंजू धाभाई
प्रधान संरक्षक

डॉ. बबीता सिंह
प्रधान संरक्षक

श्री ओमप्रकाश गुर्जर
प्रधान संरक्षक

श्री रघुनाथ गुर्जर (केमरी)
प्रधान संरक्षक

श्री रामस्वरूप सराधना
प्रधान संरक्षक

श्री शांतिलाल (जिंदल)
प्रधान संरक्षक

श्री गौरव गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री ऋषिकेश गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री गोवर्धन लाल गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री भँवरलाल चौपड़ा
मुख्य संरक्षक

श्री दयाराम गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री रामकरण कसाना
मुख्य संरक्षक

श्री मदनलाल गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री बुधराम गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री सुमेर सिंह मणकस
मुख्य संरक्षक

श्री किशनलाल गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री रामकिशन गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री महावीर खटाणा
मुख्य संरक्षक

श्री अर्जुनलाल बोकण
मुख्य संरक्षक

महावीर गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री पी.डी. गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री खेमसिंह बैंसला
मुख्य संरक्षक

श्री श्योजीराम बागड़ी
(मोखमपुरा वाले)
मुख्य संरक्षक

श्रीमती बन्नी देवी
मुख्य संरक्षक

श्री मांगीलाल गुर्जर
(दुगार) मुख्य संरक्षक

श्री मनोहरलाल गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री गिरधारीलाल गुर्जर
मुख्य संरक्षक

प्रेरणा स्रोत
स्व. श्री यतीन्द्र कुमार वर्मा
सम्पादक- वीरगुर्जर, लोनी, मेरठ (उ.प्र.)
स्व. श्री रामगोपाल गार्ड
प्रदेशाध्यक्ष-राज.गुर्जर महा.,जयपुर

प्रकाशन / प्रधान संरक्षक :
कालूलाल गुर्जर
पूर्व मंत्री, सरकारी मुख्य सचेतक, राज.सरकार

प्रकाशक/सम्पादक :
मोहनलाल वर्मा- मो. 9782655549

प्रकाशन व्यवस्थापक :
सरदार सिंह चेची- मो. 9829063710

प्रबन्ध सम्पादक :
वी.बी. जैन- मो. 9261640571

सह-सम्पादक :
डॉ. दक्षा जोशी-अहमदाबाद (गुजरात)
भावना गुर्जर- मो. 8890499200
अमरसिंह कसाना- मो. 9460875478
छीतरलाल कसाना- मो. 9929560765
शैतान सिंह गुर्जर- मो. 9414315639
देवनारायण रग्गल- मो. 9414321012

विधि सलाहकार :
प्रहलाद सिंह अवाना- मो. 9414752520
हजारीलाल सराधना- मो. 9414752519

सीकर संवाददाता : भंवर सिंह धाभाई
समस्त पद अवैतनिक हैं।

सम्पादकीय कार्यालय: 3714, कालों का मौहल्ला, के.जी.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर-302003
E-mail:devchetnanews@gmail.com

देव चेतना मासिक पत्रिका सहयोग राशि

प्रधान संरक्षक 11,000/-
मुख्य संरक्षक 5,100/-
पंचवर्षीय - 1100/-

1 बैंक खाता : मोहनलाल वर्मा
SBI, जौहरी बाजार, जयपुर
A/c No. 61163439684
IFSC: SBIN0031029

2 Bank A/c : DEV CHETNA
THE RAJASTHAN URBAN CO-OPERATIVE BANK LTD.
A/c No. 96000409474
IFS Code : UTIB0SRUCB1

RNI No. RAJHIN/2013/50503

देव चेतना

हिन्दी मासिक

सामाजिक, राजनैतिक समाचार, आध्यात्मिक ज्ञान, धर्म, दर्शन, इतिहास, साहित्य-कला एवं संस्कृति की अमृतमयी पत्रिका

वर्ष : 13 अंक: 10 जयपुर प्रकाशन तिथि: 5 दिसम्बर, 2025 मासिक

:: अनुक्रम ::

1. सम्पादकीय... व्यक्तित्व विकास के लिये शिक्षा...	4
2. जेएनयू में अंतरराष्ट्रीय बहुविषयक सम्मेलन संपन्न	5-6
3. सूर्य रश्मियाँ प्रतीक पृथ्वी पर मानव जीवन दर्शन	7-8
4. सामूहिक विवाह आयोजन समिति की अनूठी पहल	9-12
5. पटेल-पाटीदारों की गूजर उत्पत्ति का सिद्धान्त	13-16
6. वरिष्ठ नागरिक परिसंघ की राष्ट्रीय कार्यसमिति की 20वीं बैठक हुबली (कर्नाटक) में सम्पन्न	18-19
7. जिंदगीभर स्वस्थ और प्रसन्नचित्त के लिए कदम चलें...	20-21
8. शेखावाटी के बजरंग धाभाई के पौत्र का विवाह समारोह	23
9. दाम्पत्य व पारिवारिक विघटन के प्रति जागरूकता...	24-25
10. गुर्जर प्रवृत्ति व परम्परा में बदलाव की ओर कदम...	26-28
11. डेनज़िल सहास टीम जॉय ऑफ गिविंग से बाँट रहे खुशियाँ	28
12. हमारी बृजयात्रा की कुछ स्मृतियाँ	30
13. अम्बेडकर चिंतन के विविध आयाम : संगोष्ठी सम्पन्न	32
14. जगरौटी कॉलेज व यूनिवर्सल कॉलेज में विविध कार्यक्रम	33

सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र जयपुर शहर न्यायालय होगा।
पत्रिका में प्रकाशित पठनीय लेख/सामग्री के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है।
पत्रिका प्रकाशन का इस सम्बन्ध में कोई उत्तरदायित्व नहीं है।

अतिथि सम्पादकीय...

व्यक्तित्व विकास के लिये शिक्षा और संस्कारों में सामरस्य जरूरी

आज शिक्षा व्यवस्था पर जो चर्चा हो रही है, वह केवल स्कूलों, कोचिंग सेंटरों या सरकारी नीतियों की बात नहीं है; यह बात हमारे समाज की सोच और हमारे अपने भीतर बसे दोहरे मानदंडों की भी है। हम सब चाहते हैं कि हमारे बच्चों को अच्छी शिक्षा मिले, सही मार्गदर्शन मिले और वे सफल हों। लेकिन जब बात पूरे समाज की आती है, तो अक्सर हमारे मानक बदल जाते हैं।

हम अक्सर देखते हैं कि प्रतिभाशाली होते हुए भी शिक्षण या फिर कोचिंग फीस न होने के कारण अनेक बच्चे अपने सपने छोड़ देते हैं। इसके उलट, एक संपन्न परिवार का बच्चा वही अवसर आसानी से पा लेता है। यह केवल एक कहानी नहीं- भारत के लाखों परिवारों की सच्चाई है जहाँ आर्थिक स्थिति ही भविष्य तय करती है।

निजीकरण और कोचिंग उद्योग का तेज़ी से बढ़ना ऐसा माहौल बना रहा है, जहाँ शिक्षा धीरे-धीरे अधिकार नहीं, बल्कि खरीदने योग्य सेवा बनती जा रही है। सरकारी स्कूलों में शिक्षक कमी, ढांचा कमजोर और संसाधन कम हैं। दूसरी ओर निजी संस्थानों और कोचिंग सेंटर्स का कारोबार लगातार बढ़ रहा है। इस असंतुलन की वजह से बच्चों की पढ़ाई, उनके मनोबल और भविष्य पर गहरा असर पड़ रहा है।

विरोधाभास यहीं नहीं रुकता।
समाज में एक अनकहा मानदंड चलता है

जब हम स्वयं कमाई के लिए रास्ता खोजते हैं तो उसे 'कौशल', 'मेहनत' या 'व्यवसायिक समझ' कहते हैं। लेकिन यदि कोई और व्यक्ति सीमा से बाहर जाकर इसी मॉडल को किसी दूसरे क्षेत्र में अपनाता है, तो उसे 'अनुचित', 'लालची' या 'कलुषित' कह दिया जाता है। यही दोहरा मापदंड आज शिक्षा को एक तरह की उलझन में डाल रहा है।

अगर शिक्षा कमाई का जरिया बनेगी, तो वह स्वाभाविक रूप से अवसरों को असमान बनाएगी। लेकिन यदि शिक्षा को पूरी तरह व्यवसाय से दूर रखा जाए, तो यह भी कठिन है, क्योंकि संस्थानों को चलाने के लिए संसाधन चाहिए।

इसी के बीच एक संतुलन तलाशना आज की सबसे बड़ी जरूरत है।

चीन ने प्राइवेट कोचिंग पर सख्त कदम उठाए और बच्चों को मानसिक दबाव से बचाने पर जोर दिया। भारत में यह काम आसान नहीं है, क्योंकि यहाँ राजनीति, प्रशासन और निजी क्षेत्र के हित आपस में जुड़े हुए हैं। फिर भी, इसका मतलब यह नहीं कि बदलाव असंभव है।

बदलाव तभी आएगा जब समाज स्वयं शिक्षा के बाजारीकरण पर सवाल पूछे और यह समझे कि शिक्षा का असली उद्देश्य बच्चों को प्रतिस्पर्धा की मशीन बनाना नहीं, बल्कि जीवन जीने की समझ देना है।

ज़रूरत यह है कि हम अपने दोहरे मानदंडों से ऊपर उठें। जिस निष्पक्षता की उम्मीद हम अपने बच्चों के लिए करते हैं, वही निष्पक्षता पूरे समाज के लिए भी स्वीकार करनी होगी। शिक्षा का भविष्य तभी सुरक्षित होगा, जब हम इसे व्यापार की दृष्टि से नहीं, मानवता और समान अवसरों की दृष्टि से देखना शुरू करेंगे।

शिक्षा किसी एक वर्ग का विशेषाधिकार नहीं, बल्कि हर बच्चे का अधिकार है- और यह अधिकार तभी मजबूत होगा जब समाज, सरकार और परिवार तीनों मिलकर एक संतुलित, मानवीय और न्यायपूर्ण शिक्षा व्यवस्था की ओर बढ़ेंगे।

राजीव वर्मा

वर्ष-2026 में अभिनव पहल

देव चेतना पाक्षिक समाचार पत्र के वर्ष- 2026 में 5 वर्षीय सहयोगी सदस्य बनने वाले सहयोगियों को गुर्जर इतिहास साहित्य भाषा संस्कृति एवं धर्म-दर्शन पर शोध परक सामग्री से परिपूर्ण अप्रेल माह, अगस्त माह और नवम्बर माह में अतिरिक्त अंक नि:शुल्क उपलब्ध करवाये जायेंगे। देव चेतना पाक्षिक समाचार पत्र की सदस्यता ग्रहण करके अनुग्रहीत करें।

सम्पर्क : मोहन लाल वर्मा, सम्पादक 9782655549

जेएनयू में अंतरराष्ट्रीय बहुविषयक सम्मेलन सम्पन्न

उच्च शिक्षा और शैक्षणिक प्रशासन में शोध पर दो दिवसीय गहन विमर्श

शैतान सिंह गुर्जर

नई दिल्ली। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में 22-23 नवंबर 2025 को इंडो-हेलैनिक रिसर्च सेंटर, नई दिल्ली द्वारा 'उच्च शिक्षा एवं शैक्षणिक प्रशासन में शोध' विषय पर अंतरराष्ट्रीय बहुविषयक सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में भारत, ग्रीस, थाईलैंड, मलेशिया सहित विभिन्न देशों के विद्वानों और शोधार्थियों ने भाग लिया। दो दिनों तक चले इस सम्मेलन में प्राकृतिक विज्ञान, जीवन विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, भाषा, संस्कृति, प्रबंधन और शिक्षा से जुड़े 100 से अधिक शोध-पत्र प्रस्तुत किए गए।

उद्घाटन दिवस पर वैश्विक भाषाई-सांस्कृतिक अध्ययन केंद्र में रहे

उद्घाटन सत्र में विदेशी शोधकर्ताओं ने ग्रीक और मलय भाषाओं के वैश्विक संदर्भ, पूर्व-मध्य एशिया के ऐतिहासिक संघर्षों, इंडो-ग्रीक-थाई कला और आधुनिक संचार में डिजिटल भाषा की भूमिका पर अपने शोध प्रस्तुत किए। दोपहर के सत्र में सामाजिक विज्ञान के विषयों पर चर्चाएँ हुईं, जिनमें राजस्थान से गुर्जर इतिहास साहित्य एवं भाषा शोध संस्थान के राष्ट्रीय महासचिव शैतान सिंह गुर्जर ने 1857 की क्रांति में गुर्जर समुदाय की भूमिका, संघर्ष व शहादत तथा भारत के अन्तिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान तृतीय की वंश परम्परा के इतिहास का सच विषय पर विस्तृत शोध पत्र का वाचन एवं प्रस्तुत किया।

भारत में पिछड़े वर्गों की शैक्षिक स्थिति, जेंडर-आधारित शिक्षा मॉडल तथा शहरी समाज में जातीय संरचनाओं पर केंद्रित शोध शामिल रहे। देव चेतना पत्रिका के सम्पादक एवं गुर्जर इतिहास साहित्य एवं भाषा शोध संस्थान के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मोहन लाल वर्मा ने मानव प्रजाति प्रजनन प्रवृत्ति एवं परम्परागत साहित्य, कला सृजन संस्कृति विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञानों एवं मानविकी में अर्न्तसम्बन्ध पर प्रस्तुत शोध पत्र का वाचन किया।

वैज्ञानिक सत्रों में जैव प्रौद्योगिकी और पर्यावरणीय शोध रहे प्रमुख

दूसरे दिन लेक्चर हॉल-1 में प्राकृतिक और जीवन विज्ञान पर केंद्रित प्रस्तुतियाँ हुईं। शोधार्थियों ने पौधों में जैवसंश्लेषण प्रक्रियाएँ, एलोवेरा में औषधीय तत्वों की पहचान, सौर वातावरण में शॉक वेव्स, नैनोकॉम्पोज़िट आधारित जल-शोधन तकनीक, प्रदूषण नियंत्रण, पुरुष प्रजनन स्वास्थ्य तथा AI-आधारित उपभोक्ता व्यवहार जैसे विषयों पर विस्तृत शोध साझा किए।

दोपहर बाद के सत्र में बुजुर्गों में मल्टीमॉर्बिडिटी, बड़े पैमाने पर पौधों के ऊतक-संवर्धन, बायोकेमिकल डॉकिंग, किसानों द्वारा नई गन्ना किस्म अपनाने में व्यवहारगत कारक तथा कृषि उत्पाद गुणवत्ता बढ़ाने के जैव-आणविक उपायों पर चर्चा हुई।

सामाजिक विज्ञान सत्रों में संस्कृति, भाषा और समाजशास्त्र पर विमर्श

समानांतर रूप से कमिटी हॉल में सामाजिक विज्ञान के प्रस्तुतिकरण हुए, जिनमें अंग्रेज़ियत और भारतीयता, हिन्दी-उर्दू ग़ज़ल पर अध्ययन, सरोगेसी के सांस्कृतिक प्रभाव, गुरु नानक वाणी, गाँवों में नाई समुदाय की संचार भूमिका, किशोरों पर सोशल मीडिया का प्रभाव, वित्तीय साक्षरता और ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण जैसे विषय शामिल थे।

सांस्कृतिक कार्यक्रम और नेटवर्किंग ने बढ़ाया संवाद

शाम के सत्र में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसके बाद रात्रिभोज के दौरान प्रतिभागियों ने भावी संयुक्त शोध परियोजनाओं और शैक्षिक सहयोग की संभावनाओं पर विचार साझा किए।

दो दिवसीय सम्मेलन का हुआ सफल समापन

समापन अवसर पर आयोजकों ने इसे शिक्षाविदों, शोधार्थियों और अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों के सफल संवाद का महत्वपूर्ण मंच बताया, जिसने उच्च शिक्षा क्षेत्र में नई दिशा और व्यापक अकादमिक दृष्टि प्रदान की।

'सूर्य रश्मियाँ प्रतीक पृथ्वी पर मानव जीवन दर्शन'

सूर्य चन्द्र अग्निवंश गुरुत्तर गुरु गुर्जरोदय गुर्जर लोक जीवन दर्शन

✍ डॉ. मोहन लाल वर्मा

किसी भी देश और जाति का अस्तित्व उसकी संस्कृति के कारण बना रह सकता है। संस्कृति के उदयास्त से ही राष्ट्र का उदयास्त होता है। देश और जाति का उत्थान संस्कृति प्रेरित आचरण से ही हो सकता है। अपनी संस्कृति के पतन से ही देश और जाति अवनति को प्राप्त होते हैं। इस तथ्य को स्वीकार किए बिना अखंड भारत गुर्जर देश का निर्माण नहीं हो सकता है। वर्तमान में भारत का राजनैतिक और सांस्कृतिक जीवन पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति के मार्ग पर चलकर अपने देश और संस्कृति के निकट नहीं जा सकता है। समूचे विश्व की सभ्यता और संस्कृति के इतिहास अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि 'उदान और विसर्ग', व्यष्टि और समष्टि, आध्यात्मिकता और भौतिकता के जितने सिद्धांत प्रचलित हैं, प्रश्न है उनमें भारत ने विसर्गऔर आध्यात्मिकता को क्यों अपनाया?

हमारे यहां प्रतिदिन की जाने वाली सूर्य संध्या उपासना में सूर्य का एक मंत्र निम्न प्रकार है:-

चित्र देवाना मुद गादिनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुण स्योग्नें।
आद्रा द्यावा पृथ्वी अंतरिक्ष ? सूर्या आत्मा जगस्तस्थुषश्च।

इस मंत्र ने सूर्य को जगत् की आत्मा बता कर उपयुक्त प्रश्न का उत्तर दिया है। जिस प्रकार आत्मा का चैंतन्यमय स्वरूप, शरीर के प्रत्येक अंग को भिन्न भिन्न अर्थों में संजीवित(चैंतन्यमय) प्रकाशित तथा प्रेरित किए हुए हैं, वैसे ही सूर्यनारायण अपनी सहस्त्र रश्मियों (किरणों) के द्वारा हर देश की प्रकृति और प्रवृत्ति को भिन्न-भिन्न रूपों से प्रकाशित प्रभावी तथा प्रेरित करते हैं। पिण्ड स्थित आत्मा जैसे कर्मेंद्रियों को भिन्न भिन्न प्रकार की प्रवृत्तिमय शक्तियां प्रदान करता है, उसी तरह ब्रह्मांड के आत्म रूप सूर्य की भिंन्न भिंन्न प्रभाव वाली किरणें, भूमंडल के अलग-अलग देशों को भिन्न-भिन्न आध्यात्मिक और भौतिक प्रवृतियां प्रदान करती है। हमारे शरीर को कार्य करने वाली इंद्रियों को अपना अपना कार्य करने की जो प्रेरणा अथवा प्रवृत्ति मिलती है, इसका प्रत्यक्ष कारण शरीर स्थित आत्मा होती हुए भी मूल स्त्रोत अथवा उद्गम स्थान सूर्य मंडल ही है। वहीं से आत्मा के द्वारा शरीर की सब इंद्रियों को अपने अपने कार्य की प्रवृत्ति मिलती है।

इसके अगले मंत्र में स्वधर्म रत् हिंदू प्रातः कालीन पुनीत बेला में ब्रह्मांड के आत्म स्वरूप सूर्य देव से 'पश्येंम शरद:शंत् जीवेम शरद: शत् श्रृणुयाम:शरद: शत् प्रंब्रवाम शरद:। कहकर अपनी इंद्रियों को सत्य प्रेरणा देने की प्रार्थना करता है। सहस्त्रांशु की प्रथम रश्मि जहां आसुरी संपत्ति मुलक है भौतिक संपत्ति की उत्पादक है, वहां सूर्य की सातवीं रश्मि दैवी संपत्ति मुलक, आध्यात्मिक उन्नति की प्रेरणा देने वाली है। भौगोलिक स्थिति के कारण सूर्य की सातवीं किरण भारतवर्ष में गंगा यमुना के मध्य अधिक समय तक पड़ती है।

इसलिए यहां अवतारादि और आध्यात्मिकता का प्रसार करने वाले ऋषि महर्षि संत एवं महापुरुष समष्टि हित में त्याग का उपदेश देते आए हैं और देते रहेंगे। सूर्य रश्मियों के प्रथक प्रथक रूप में पड़ने की संभावना सूर्य और पृथ्वी के परस्पर

गति युक्त संबंध के कारण होती है। इस दृष्टि से भारत की हिंदू संस्कृति में सूर्य किरणों का कितना और कैसा विलक्षण संबंध है। जो मानव जीवन को प्रेरित और संचालित करता है।

भारतवर्ष के साहित्य और इतिहास में गुर्जर देश अर्थात गुर्जरों द्वारा रक्षित क्षेत्र का गुर्जरत्रा नाम से उल्लेख है। साहित्य और इतिहास में आर्य (श्रेष्ठ) गुर्जर (ज्ञान और बल में गुरु) अर्थात महान तथा शक अर्थात (शक्ति संपन्न) शब्दों का प्रयोग पाया जाता है। सूर्य को जगत का आत्मा तथा जगतगुरु अर्थात जीव जगत को प्रकाशित अथवा उत्पन्न करने वाला कहा गया है।

इन दोनों क्रियाओं का माध्यम सूर्य रश्मियां और आधार सूर्य हैं। इस दृष्टि से 'सूर्योदय और गुर्जरोंदय' दोनों शब्द समानार्थक है। ब्राह्मण ने बुद्धि अथवा ब्राह्मण वर्ग द्वारा कालांतर में सूर्य उपासना को भुला दिए जाने और अवतारवाद की धारणा में रूढ़ता प्रदान करने के प्रयास में सूर्य यज्ञ पूजा के स्थान पर मूर्ति पूजा को प्रोत्साहित करने के प्रयासों के चलते भारतवर्ष में विभिन्न संप्रदाय धर्म पद्धतियों का आविर्भाव हुआ। जिसने संगठित भारतीय समाज जीवन को जाति और संप्रदाय धर्मों में खंड खंड कर दिया परिणाम स्वरुप अखंड भारत वर्तमान खंड खंड स्वरूप को प्राप्त हुआ।

ऐतिहासिक मध्य युग में गुर्जर देशीय लोक संस्कृति में पुनः सूर्य उपासना आधारित श्री देवनारायण (ईंटों में श्याम) उपासना में सनातन धर्म तत्व से उत्पन्न सभी धर्म संप्रदायों और जातियों को श्री देवनारायण उपासना में समन्वय स्थापन के प्रयास प्रारंभ हुए। इतिहास की पुस्तकों में गुर्जर शब्द की उत्पत्ति राजा दशरथ द्वारा धारण की गई गुरुत्तर उपाधी से मानी गयीं है। यथार्थ में आर्य गुर्जर, शक ,शब्द सूर्य से उत्पत्ति मुलक शब्द है। जिससे तात्पर्य श्रेष्ठ ज्ञान युक्त और बलशाली मानव समूह के लिए प्रयुक्त हुए हैं। इसी प्रकार गुर्जर जन्म का तात्पर्य (गुर्जरोंदय) है। जिस प्रकार 'गो 'शब्द इंद्रियों, सूर्य रश्मियों, पृथ्वी, एवं गो पशु के अर्थ प्रकाश रूप है। गुर्जर देश जहां ऐसे ज्ञान युक्त श्रेष्ठ बलशाली मानव समूह से रक्षित क्षेत्र जिसकी अभेद्य दीवार को तोड़ने में विदेशी आक्रांताओं को सैकड़ों वर्ष लग गए। भारतवर्ष का इतिहास साक्षी है कि गुर्जर सैकड़ों वर्ष तक विदेशी आक्रांताओं से निरंतर संघर्षरत रहे है।

बगड़ावत भारत लोक वार्ता में सूर्य एवं श्री देवनारायण के शरीर से प्रस्फुटित किरणों में अनेक स्थानों पर साम्य दर्शाया गया है। जिस प्रकार सूर्य का जन्म शास्त्रों में सूर्य सप्तमी कहा गया है वहीं बगड़ावत भारत लोक वार्ता में सूर्य सप्तमी को ही कमल पुष्प में श्री देवनारायण का जन्म अथवा अवतार कहा गया है।

वर्तमान हिंदुस्तान का भी प्राचीन नाम भारत है। प्राचीन वशांवलियों में ऋषभ के पुत्र का नाम भारत था, जिस के नाम पर उनके राज्य का नाम भारत वर्ष हुआ। अजनाभ वर्ष नाम राजा पृथु के समय रहा है। इन्हीं के नाम पर धरती का नाम पृथ्वी पड़ा। ऋग्वेद में कई स्थानों पर भरत नाम के वंशो और कुलों का उल्लेख है। हिंदू संस्कृति के अवशेष उत्तर यूरोप, मध्य एशिया, काकेशस पर्वत, ईरान तथा हिंदूकुश पर्वत आदि स्थानों में आज भी मिलते हैं। संसार में फिंनिशिया, वैबिलन, सुमेरिया, मिस्त्र और चीन की संस्कृति भी आर्य संस्कृति की शाखाएं थी। जिनका उल्लेख हमें गुर्जर साम्राज्य काल में कुषाण राज्य वंश के शासन के समय प्राप्त होता है। गुर्जर साम्राज्य काल में इसे गुर्जर देश कहा गया ,जिसके साक्ष्य आज भी उज़्बेकिस्तान , जॉर्जिया, करद्, ईरान, अफगानिस्तान, इराक, पाकिस्तान और भारत में गुर्जरों का होना है। यथार्थ में भूमंडल पर सभी मानव वंश सूर्य चंद्र अग्नि से उत्पन्न है। गुर्जरों में इन तीनों पौराणिक वंशो के समन्वय का कार्य ऐतिहासिक युग में प्रारंभ हुआ और आज भी मानव जीवन की प्रेरक सूर्य रश्मि प्रतीक श्री देवनारायण अवतार लीला अभिप्रेत मानव जीवन दर्शन गुर्जर लोक संस्कृति में प्रतिष्ठित है।

देर आए दुरुस्त आए

सामूहिक विवाह आयोजन समिति गुर्जर समाज जयपुर की अनूठी पहल

✍ डॉ. मोहन लाल वर्मा

जयपुर। राजस्थान प्रदेश की राजधानी जयपुर में पिछले तीन दशक से सेवाकार्य कर रही सामूहिक विवाह आयोजन समिति ने इस बार पूर्व अध्यक्ष कैलाश धाभाई एवं रमेश चेची, गौरीशंकर डोई की अध्यक्षता में सामूहिक विवाह आयोजन समिति के कार्य को ऊँचाई तक पहुँचाने के पश्चात् कतिपय कारणों से सामूहिक विवाह आयोजन कार्यक्रम में कार्यकर्ताओं के परस्पर विरोधाभास के कारण उत्पन्न हुई शिथिलता को इस बार परस्पर विचार-विमर्श पश्चात् समाज में एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करने का सराहनीय कार्य किया है।

इस बार सर्वसम्मति से सामूहिक विवाह आयोजन समिति की कार्यसमिति का निर्वाचन निर्विरोध सम्पन्न हुआ। सामूहिक विवाह वर्तमान समय में युग की आवश्यकता है। सामूहिक विवाह में न केवल समाज बल्कि सामूहिक विवाह आयोजन समिति में कार्य कर रहे कार्यकर्ताओं को भी अपने बच्चों का सामूहिक विवाह सम्मेलन में विवाह करने की दिशा में भी पहल करने की आवश्यकता है। वर्तमान समय में विवाह संस्था को लेकर जो परिदृश्य समाजों में दृष्टिगोचर हो रहा है उन परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए विभिन्न समाजों ने विवाह आयोजन की दिशा में नवाचारों को अपनाया है। गुर्जर समाज में वर्तमान समय में सामाजिक सुधार की दिशा में भी सकारात्मक कदम प्रदेश के विभिन्न जिलों में उठाये जा रहे हैं। इन परिस्थितियों में सामूहिक विवाह आयोजन समिति द्वारा निर्विरोध कार्यसमिति का निर्वाचन समाज के विभिन्न घटकों के समक्ष एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करेगा, ऐसी अपेक्षा की जा सकती है।

सामूहिक विवाह आयोजन समिति गुर्जर समाज की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी ने ली शपथ

जयपुर। सामूहिक विवाह आयोजन समिति गुर्जर समाज की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी का संस्कृत कॉलेज ब्रह्मपुरी में शपथ ग्रहण समारोह हुआ। निवर्तमान अध्यक्ष गोविन्द पोसवाल व समिति के चुनाव अधिकारी मोहन लाल बागड़ी ने शपथ दिलाई। अध्यक्ष कन्हैयालाल छाबड़ी, महामंत्री नवरत्न गुर्जर बारवाल, कोषाध्यक्ष लक्ष्मण लादी को पद की शपथ दिलाई। इस दौरान विधायक बालमुकुन्दाचार्य महाराज, डी.सी. बैरवा

सहित अन्य लोग मौजूद रहे। इस दौरान आगामी परिचय सम्मेलन में सहयोग स्वरूप सम्पूर्ण हलवाई एवं कैटरिंग की व्यवस्था करने की जिम्मेदारी समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष रामस्वरूप सराधना ने ली।

जाट गुर्जर सम्मेलन

नई दिल्ली 23 नवम्बर को सर छोटूराम चौधरी की जयन्ती के अवसर पर अखिल भारतीय गुर्जर महासभा एवं जाट महासभा के तत्वावधान में मावलंकर हाल में एक सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन की पृष्ठभूमि वर्तमान सामाजिक व्यवस्था परिवर्तन के दौर में विभिन्न समाजों में विशेष रूप से किसान जातियों को एक मंच पर लाने के प्रयास प्रमुख रूप से रहा।

अखिल भारतीय गुर्जर महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. यशवीर सिंह, अखिल भारतीय गुर्जर महासभा के कार्यकारी अध्यक्ष पूर्व मंत्री हरीशचन्द्र भाटी, राजपाल सिंह कसाना, इतिहासकार शैतान सिंह गुर्जर, डॉ. रूपसिंह, जाट नेता राजाराम मील, जाट महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं मंचस्थ वक्ताओं ने अपने उद्बोधन में जाट, गुर्जर समाज में शिक्षा, रोजगार, आर्थिक उन्नति, जैविक खेती को बढ़ावा, कृषि सुधार तथा समाजों में परस्पर विवाह आयोजित करने की पहल करने का संकल्प भी लिया। सम्मेलन में यह भी निर्णय लिया कि आने वाले समय में देश के विभिन्न प्रान्तों में इस प्रयास को गति प्रदान करने के लिये दोनों ही समाज संयुक्त रूप से सम्मेलनों का आयोजन करेंगे।

8 राज्यों की 36 बिरादरी की खापें नए जमाने के साथ बदल रहीं खाप; प्रेम विवाह में मां-बाप राजी तो दिक्कत नहीं

19 नवंबर को हरियाणा के रोहतक जिले के काहनी गांव में 23 वर्षीय सपना को उसके भाई संजू ने मार डाला, क्योंकि सपना ने तीन साल पहले गांव के ही सूरज से प्रेम विवाह किया था।

25 नवंबर को यूपी में शाहजहांपुर के इटौरा गौटिया गांव 22 साल की मैना की ऑनर किलिंग हुई। भाइयों ने ही गला काट दिया, क्योंकि वह अपनी पसंद की शादी पर अड़ी थी।

इज्जत के नाम पर हो रहीं ऐसे ही हत्याओं और दहेज, भ्रूण हत्या व मृत्युभोज जैसी सामाजिक बुराइयों को रोकने के लिए देशभर की खाप पंचायतें पिछले महीने 16, 17, 18 नवंबर को मुजफ्फरनगर के जिस सोरम गांव में तीन दिन जुटी थीं, दैनिक समाचार पत्र की टीम वहीं पहुंची तो यहां सर्वखाप पंचायत का एक ही फैसला सुर्खियों में था। दरअसल, सर्वखाप ने तय किया है कि प्रेम विवाह अब स्वीकार्य हैं। माता-पिता की सहमति है तो खाप हस्तक्षेप नहीं करेंगी। यह फैसला इसलिए भी ऐतिहासिक है, क्योंकि खाप पंचायतें गोत्र, गांव, बिरादरी नियमों के आधार पर प्रेम विवाह का दशकों से विरोध करती रही हैं। उनके फरमान कई बार सामाजिक बहिष्कार और हिंसा जैसे परिणाम लेकर आए। इस महापंचायत में हरियाणा, पंजाब, एमपी, छत्तीसगढ़, बिहार, यूपी, उत्तराखंड, राजस्थान आदि राज्यों के जाट, गुर्जर, राजपूत, यादव, कश्यप, ब्राह्मण, दलित और मुस्लिम समाज की सभी

36 खाप बिरादरियों के प्रतिनिधि थे। इसमें शामिल करीब एक लाख लोगों में आधे 20 से 35 साल के युवा थे। युवा इसलिए ज्यादा थे, क्योंकि खापों के कई फैसलों के कारण

इनकी शादियां नहीं हो रहीं। देश की सबसे बड़ी बालियान खाप के प्रधान नरेश टिकैत ने भास्कर को बताया कि इतने लोग इसलिए आए, क्योंकि इस बार राजनीति या किसानी नहीं, बल्कि प्रेम विवाह, अंतरजातीय विवाह शुरू करने, दहेज न लेने, मृत्युभोज बंद करने, समलैंगिक शादी जैसे 11 मुद्दे थे, जिन पर सहमति बन गई।

जिस प्रेम विवाह में मां-बाप राजी होंगे, उसमें समाज, रिश्तेदार या खाप हस्तक्षेप नहीं करेगी। आखिर प्रेम विवाह पर खापें राजी क्यों हो रही थीं? इस सवाल पर एमएससी करने के बाद किसानी कर रहे अमरदीप पंवार बोले- अभी 30% शादियां प्रेम विवाह हैं। इनमें भी 40% घरवाले खुद करा रहे हैं। एक गोत्र-एक वर्ग, गांव के फरमान जो परिवार मान रहे, उनके यहां 30% युवा कुंवारे हैं। शामली, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर से लेकर दिल्ली-एनसीआर के कई गांवों में सैकड़ों अविवाहित मिल जाएंगे। प्रेम विवाह इस संकट को काफी हद तक दूर कर सकता है। शामली जिले के गन्ना किसान समिति के चेयरमैन और खाप बत्तीसा के अशोक चौधरी बताते हैं, 'प्रेम विवाह की इजाजत से समाज की कई बुराइयां और मुश्किलें कम होंगी। किसान नेता कपिल सांगवान कहते हैं- मैं शादियों की पंचायतों और सुलह बैठकों में रहता हूं। शादी के शुरुआती 3 साल हर घर में झगड़े ही हो रहे हैं। उसके बाद 10 में से 6 शादियां टिक जाती हैं, लेकिन 4 तलाक और मुकदमों में फंस जाती हैं। नतीजा- युवाओं की शादियां नहीं हो रहीं। खापों का ताजा फैसला युवाओं को अपराध या केस में फंसने से बचाएगा। क्या खापें दलित-मुस्लिमों से भी प्रेम विवाह की इजाजत पर राजी हैं? इस सवाल के जवाब में एक चौधरी ने बताया कि सोरम में यह बात चर्चा में आई थी, लेकिन मंच तक नही पहुंची। यानी यह सवाल आज भी अति संवेदनशील है। फिलहाल इस सिलसिले को आगे बढ़ाने के लिए दिल्ली के कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में 1 दिसंबर को गुर्जर और जाट समाज की एक बैठक हुई थी। यह पहली बार था कि दोनों जातियां एक मंच पर आई थीं। इस बैठक मूल मकसद था कि एक तरह की जाति होने के बावजूद हम बटे क्यों हैं? आपस में टकराहट क्यों बढ़ रही है? इस स्थिति को संवारना पड़ेगा। मेरठ के वरिष्ठ पत्रकार और खापों पर पीएचडी कर चुके रविंद्र राणा कहते

हैं, 'भारतीय किसान यूनियन के राष्ट्रीय अध्यक्ष राकेश टिकैत ने मुझसे बातचीत में कहा था- कि जिन जातियों के घड़ा और हुक्का-पानी एक हैं। उनमें शादियों की शुरुआत होनी चाहिए। इतना ही नहीं, गोत्र विवाद को लेकर उन्होंने दक्षिण भारत के हिंदुओं में मामा-भांजी की शादी का भी जिक्र किया, लेकिन उसके बाद उन्हें इतना ज्यादा ट्रोल किया गया कि उन्होंने यह बात दुबारा कहीं कहने की हिम्मत नहीं की।' हालांकि नरेश टिकैत ने सोरम पंचायत में भी समान कद वाली जातियों खासकर जाट, गुर्जर और राजपूतों में शादियों की बात छेड़ी, लेकिन मंच से विरोध हुआ जिसके बाद वह अपने इस विचार को 11 सूत्रीय मुद्दों में शामिल नहीं कर सके।

वो फरमान, जिनसे कई परिवार प्रताड़ित हुए

2000 से 2007: कई खापों ने फरमान दिए कि एक ही या पड़ोसी गोत्र में प्रेम विवाह मान्य नहीं हैं। इस फैसले के बाद प्रेम विवाह करने वालों का सामाजिक बहिष्कार होने लगा। 2007 में करनाल में मनोज-बबली ऑनर किलिंग हुई।

2010-2014: कुछ खापों ने सार्वजनिक रूप से कहा कि लव मैरिज संमाज को खराब करती है। ऐसे परिवारों के सामाजिक बहिष्कारों का फरमान दिया।

2015-2020 के बीच कई मामलों में खाप पंचायतों ने प्रेम विवाह करने वालों को समुदाय से बाहर कर दिया। कुछ जगह हुक्का पानी तक बंद करवा दिया गया।

2021-2023 के बीच पश्चिम यूपी की कई पंचायतों ने प्रेम विवाह के केस में परिजनों को गांव छोड़ने की सलाह दी। जुर्माना लगाया। ऑनर किलिंग के मामले बढ़े, जो अब तक हो रहे हैं।

ये झूठ है कि डीएनए मिक्सिंग से पीढ़ियां कमजोर होती हैं

प्रेम विवाह का विरोध करने वाली कुछ खाप पंचायतें डीएनए मिक्सिंग से कमजोर नस्लों की बात उठाती हैं। यह गलत है। इसे ऐसे समझना होगा कि जिन राज्यों में सबसे ज्यादा विदेशी आक्रांताओं के हमले हुए, उनके लोग वहीं बस गए। हमारे देश में जिन इलाकों में सबसे ज्यादा डीएनए मिक्सिंग हुई, वहां के लोग आज शारीरिक रूप से सबसे ज्यादा मजबूत हैं। एक डीएनए के नुकसान ज्यादा हैं और उससे जेनेटिक रोग बढ़ने का खतरा ज्यादा होता है। शरीर विज्ञान में कोई शोध नहीं बताता कि डीएनए मिक्सिंग से पीढ़ियां कमजोर हुई।

- डॉ. एमसी मिश्रा, पूर्व निदेशक, एम्स दिल्ली

समान गोत्र की खेतिहर जातियों में भी ऐसे विवाह पर विचार

बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि जाटों के सबसे बड़े नेता रहे चौधरी चरण सिंह ने अपनी तीनों बेटियों की शादी अंतरजातीय की थी। लोकदल के मौजूदा अध्यक्ष जयंत चौधरी की शादी भी अंतरजातीय है। ऐसे में अब जातीय अस्मिता व ग्रामीण संस्कृति की ध्वजवाहक जाट जाति में विवाह को लेकर गंभीर मंथन चल रहा है। ग्रामीण माता-पिता खुद बच्चों का वैवाहिक भविष्य तय कर रहे हैं। जहां खापों ने प्रेम विवाह पर सहमति दी, वहीं समान गोत्र की खेतिहर जातियों में विवाह को स्वीकृति देने पर गंभीर विचार हो रहा है। *- प्रो. सुधीर पंवार, लखनऊ विश्वविद्यालय*

उम्र बढ़ना रोग नहीं अपितु जीवन का स्वाभाविक संगीत

उम्र बढ़ना किसी बीमारी का नाम नहीं, बस जीवन का एक शांत और सरल बदलाव है। जैसे पेड़ पुराने पत्ते छोड़कर नए मौसम को अपनाता है, वैसे ही हमारा शरीर भी समय के साथ थोड़ा-थोड़ा बदलता है। कभी चाबी कहाँ रखी भूल जाती है, तो कभी शरीर थोड़ा धीमा हो जाता है- यह सब स्वाभाविक है, डरने की बात नहीं। जब हम चीज़ें खुद ढूँढ लेते हैं, चल-फिर लेते हैं और रोज़मर्रा का काम कर लेते हैं, तो यह बीमारी नहीं, बस बढ़ती उम्र का सामान्य असर है।

कभी नींद रात में बार-बार खुल जाती है, कभी सुबह जल्दी आँख खुल जाती है- यह भी कोई रोग नहीं, बस जीवन की लय बदल रही है। थोड़ा धूप में बैठना, थोड़ा टहलना और मन को शांत रखना नींद को दवा से बेहतर बनाता है। शरीर में हल्का दर्द, जकड़न या कमजोरी भी अक्सर बीमारी नहीं होती, बल्कि शरीर का ही अपना तरीका होता है यह कहने का कि उसे थोड़ी गतिविधि चाहिए, थोड़ी गर्माहट चाहिए, थोड़ा ध्यान चाहिए।

रिपोर्टों पर ज्यादा घबराने की जरूरत नहीं। बुज़ुर्गों में कई मान सामान्य से थोड़ा ऊपर-नीचे होना स्वाभाविक है। असली बीमारी अक्सर रिपोर्टों में नहीं, हमारे डर में होती है। डर मन को कमजोर करता है और शरीर को भी थका देता है। इसलिए बुज़ुर्गों के लिए सबसे ज़रूरी दवा है- साथ, प्यार और भरोसा।

अकेलापन शरीर से ज्यादा मन को चोट पहुँचाता है। जब कोई साथी नहीं रहता, जब बच्चे व्यस्त हो जाते हैं, तो मन को लगता है कि वह अकेला है। पर सच यह है कि बातचीत का एक पल, किसी का हाथ पकड़कर चलना, छोटी-सी हँसी, साथ बैठकर खाना- ये सब बूढ़े दिल को फिर से जीना सिखा देते हैं।

जीवन हमेशा दूसरों पर निर्भर रहकर नहीं जीया जाता। जो चीज़ें अपने बस में हों, उन्हें खुद तय करना- क्या खाना,

कहाँ जाना, किससे बात करनी है- यह आत्मनिर्भरता मन में ताकत जगाती है। उम्र चाहे कितनी भी हो जाए, अपने जीवन का नियंत्रण अपने हाथ में रखना ही सबसे बड़ी खुशी देता है।

रिश्तों में उम्मीदें कम और समझ ज्यादा होनी चाहिए। हर इंसान में कमियाँ भी होती हैं और खूबियाँ भी। यदि हम केवल कमियाँ देखते हैं, तो रिश्ते भारी हो जाते हैं; लेकिन अगर गुण देखने की आदत डालें, तो दिल हल्का हो जाता है। किसी को मुस्कुराना, किसी का मन हल्का करना, किसी की मदद करना- यह सब हमारे अपने जीवन को भी रोशन कर देता है।

और जब रास्ता कठिन लगे, आँखों में आँसू आएँ, या मन थक जाए- तब भी थोड़ा मुस्कुरा लेना चाहिए, क्योंकि मुस्कान हमें याद दिलाती है कि सफ़र अभी खत्म नहीं हुआ। चाहे कितना भी धीमे चलें, बस चलते रहना ही जीवन है।

उम्र बढ़ना दुश्मन नहीं है, ठहर जाना असली दुश्मन है। जब तक हम मन से जागते हैं, प्यार बाँटते हैं, थोड़ा-बहुत चलते-फिरते हैं, दूसरों से जुड़े रहते हैं- तब तक हम सच में ज़िंदा हैं।

जीवन कठिन है, पर खूबसूरत भी है- बस इसे अपनाने की जरूरत है, समझने की जरूरत है, और एक-दूसरे का हाथ थामकर आगे बढ़ने की जरूरत है।

पटेल-पाटीदारों की गूजर उत्पत्ति का सिद्धांत

- डा. सुशील भाटी

कन्बी जाति जो पाटीदार के नाम से भी जानी जाती हैं, गुजरात की प्रमुख किसान जाति हैं। कन्बी वास्तव में एक जाति नहीं बल्कि किसान जातियों का एक वर्ग अथवा पुंज हैं। इनकी संयुक्त आबादी गुजरात के हिन्दुओं के 14.26 प्रतिशत हैं। कन्बी नामक इस 'जाति पुंज' में प्रमुख रूप से चार जाति हैं- लेवा, खंडवा, अंजना आदि। परंपरागत रूप से ये चारों आपस में विवाह आदि- रोटी-बेटी का व्यवहार नहीं करते, जोकि किसी जाति की अनिवार्य विशेषता हैं। इसलिए कन्बी शब्द गुजरात में किसी एक जाति के लिए नहीं बल्कि 'किसान जातियों के वर्ग' के लिए प्रयोग किया जाता हैं जो कि गुजरात के जातीय सोपान क्रम में उनके स्थान को निर्धारित करता हैं। एक जाति पुंज के अंतर्गत आनेवाली जातियों भिन्न-भिन्न उत्पत्ति की होती हैं तथा इनमे अधिकांश के किसी क्षेत्र में आबाद होने के काल भी भिन्न-भिन्न होते हैं। भारत में होनेवाली जनगणनाओ से पता चलता हैं कि कन्बी/कुनबी शब्द का प्रयोग क्रमश: घटता गया हैं। इस में धीरे-धीरे सभी कन्बी अपने आपको महाराष्ट्र में मराठा और गुजरात में पाटीदार कहने लगे क्योंकि मराठा और पाटीदार शब्द से अभिजात्यता का भास होता हैं।

कन्बी शब्द की उत्पत्ति कुटुम्बिन शब्द से हुई हैं। कुटुम्बिन शब्द का प्रयोग पूर्व मध्यकालीन गुजरात में भूमि दान सम्बन्धी ताम्पत्रो एवं लेखो-जोखो में किसान के लिए किया गया हैं। कुटुम्बिन/कुटुम्बी का अर्थ हैं किसान परिवार का मुखिया। पूर्व मध्यकालीन भूमि दान सम्बन्धी ताम्पत्रो एवं लेखो-जोखो में किसानो/कुटुम्बिनो की संख्या उनके नाम तथा उनके द्वारा जोती जानेवाली भूमि की माप अंकित की जाती थी।

कन्बियो और पाटीदारो के विषय में गुजरात में स्थानीय मान्यता हैं कि वे दो हजार साल पहले बाहर से आकर गुजरात में बसे हैं।

वड़ोदरा गजेटेयर के अनुसार गुजरात के कन्बी अथवा पाटीदार मूल रूप से पंजाब से आये हुए गूजर हैं। जिन्होने साबरमती और माही नदियों के बीच की उपजाऊ भूमि 'चरोतर'

पर अधिकार कर लिया और यही बस गए। इस भूमि पर अपने अधिकार को पुख्ता करने के लिए इन्होंने स्थानीय शासको से स्थायी पट्टे प्राप्त किये, जिसके कारण से ये पट्टीदार/पाटीदार कहलाने लगे।

1899 में छपे बॉम्बे गज़टेयर, खंड 9 भाग 1 के अनुसार गुजरात के कन्बी अथवा पाटीदार गुर्जरों के श्वेत हूण कबीले (485-542 ई.) से सम्बंधित हैं, जोकि महान विजेता थे। वही आगे बताया गया कि किस प्रकार इन श्वेत हूणो ने कुषाणों (50- 230 ई.) के इतिहास, विरासत और आबादी को आत्मसात कर लिया।

बॉम्बे गजेटियर, खंड 9 भाग 2 के अनुसार उन्नीसवीं शताब्दी के बाद के दशको में, लेवा तथा कड़वा/खंडवा कन्बी, दोनों के लिए, इस बात को दुनिया के सामने जाहिर करने का विशेष महत्व था, जोकि गुजरात में सावधानीपूर्वक छिपा कर रखा गया था, कि उत्तरी गुजरात और भडोच में रहने वाली पाटीदारो और कन्बियो की बड़ी आबादी वंशक्रम में गूजर हैं। उस समय उत्तरी गुजरात के कन्बी और पंजाब के गूजरो को द्वारका (गुजरात) में इस बात से संतुष्ट होते देखा जाना कोई अपवाद नहीं था, कि दोनों एक ही मूल (Stock) के हैं। पाटीदार जाति के जूनागढ़ निवासी हिम्मतभाई अजा भाई वहीवतदार का 1889 में जूनागढ़ में दिया गया यह वक्तव्य कन्बियो और पाटीदारों की गूजर उत्पत्ति के प्रश्न को अंतिम रूप से तय करता हुए प्रतीत होता हैं- मैं संतुष्ट हूँ कि गुजरात के कन्बी और पाटीदार, लेवा और खंडवा दोनों, गूजर हैं। हमारे पास इस सम्बन्ध में लिखित कुछ भी नहीं हैं परन्तु हमारे भाट और परिवारों का लेखा-जोखा रखने वाले इसे जानते हैं, लेवा और खंडवा दोनों पंजाब से आये हैं, यह बुजुर्गो का कहना हैं। भाटो का कहना हैं कि हमने बीस पीढ़ी पहले पंजाब छोड़ दिया था। एक सूखा हमें गंगा और जमुना के बीच की ज़मीन पर ले गया। पन्द्रह पीढ़ी पहले लेवा खानदेश होते हुए अहमदाबाद आये तथा खानदेशी तम्बाकू अपने साथ (गुजरात) लाये।..... सबसे पहले वो चंपानेर आये। हम अभी भी पता कर सकते हैं कि हम पंजाब के गूजर हैं। हमारे जुताई का तरीका एक हैं, हमारा हल एक (जैसा) हैं, हमारी पगड़ी एक (जैसी) हैं, हम एक ही तरीके से खाद का इस्तेमाल करते हैं। हमारे शादी-ब्याह के रिवाज़ एक (जैसे) हैं, दोनों ब्याह के समय तलवार धारण करते हैं। रामचंद्र के दो बेटे थे। लव से लेवा जन्मे और कुश से खंडवा। मैंने पंजाब के गूजरों से द्वारका में बात की हैं, उन्होंने बताया कि उनके नरवादारी और भागदारी गांव हैं।

पाटीदार मूलत: गूजर कबीले का अंग हैं इस बात का एक अन्य प्रमाण यह हैं कि गुजरात के पाटीदार और उत्तर भारत का गूजर, दोनों अपना पूर्वज रघु वंश में ज़न्मे राम के पुत्र लव और कुश को मानते हैं। उत्तर भारत के गूजर भी एक हजार वर्ष से अधिक समय से अपने कुल का सम्बन्ध राम से जोड़कर देखते रहे हैं। उत्तर भारत में अंतिम हिंदू साम्रज्य के निर्माता गुर्जर-प्रतिहार सम्राट मिहिर भोज ने अपने ग्वालियर अभिलेख में अपनी उत्पत्ति भगवान राम के भाई लक्ष्मण से होने का दावा किया हैं। इस दावे को तत्कालीन समाज में भी एक मान्यता प्राप्त थी क्योकि गूजर-प्रतिहारो के दरबारी कवि राजशेखर ने अपने ग्रन्थ कर्पूर मंजरी में गूजर-प्रतिहार सम्राट महिपाल को रघुकुलतिलक और रघुकुल ग्रामिणी कहा हैं। राजस्थान और मध्य प्रदेश के गूजर आज भी अपने को राम की संतान मानते हैं तथा लौर और खारी नामक अंतर्विवाही समूहों में विभाजित हैं। लौर गूजर राम के बेटे लव के वंशज और खारी गूजर उनके दूसरे बेटे कुश के वंशज माने जाते हैं। लौर खुद को खारी गूजरो से ऊँचा मानकर उनसे विवाह नहीं करते। इसी प्रकार गुजरात के पाटीदार भी अपने राजस्थान के गूजर भाइयो की तरह दो अंतर्विवाही समूहों लेवा और कड़वा में बटे हैं, जोकि क्रमश: लोर और खारी का ही परिवर्तित रूप हैं। लेवा पाटीदार लोर गूजर की भाति राम के बेटे लव और कड़वा पाटीदार खारी गूजर की भाति कुश की संतान कहे जाते हैं। राजस्थान के गुजरों की तर्ज पर ही लेवा अपने को कड़वा पाटीदारो से ऊँचा समझते हैं और उनके साथ विवाह सम्बन्ध नहीं करते। अत: राजस्थान के गूजरों और गुजरात के पाटीदारो का राम के कुल से समान उत्पत्ति का दावा और सामान सामाजिक संरचना उनके मूलत: एक ही समुदाय होने का प्रबल प्रमाण हैं।

पाटीदार जाति के जूनागढ़ निवासी हिम्मतभाई अजा भाई वहीवतदार का 1889 में जूनागढ़ में दिए गए उपरोक्त वक्तव्य में कहा गया हैं कि गुजरात के लेवा पाटीदार खानदेश से होते गुजरात आये। लेवा पाटीदारों की आबादी गुजरात के

अलावा मध्य प्रदेश के इन्दोर संभाग और महाराष्ट्र के खानदेश में भी हैं, और ये यहाँ लेवा गूजर नाम से जाने जाते हैं। यहाँ के लेवा गूजरो और गुजरात के लेवा पाटीदारो के बीच परंपरागत रूप से विवाह सम्बन्ध भी होते हैं। जो इस बात का प्रमाण हैं कि दोनों मूलत: एक ही जाति हैं।

महाराष्ट्र के खानदेश इलाके में कई प्रकार के गूजर हैं- लेवा, रेवे, दोडे आदि। खानदेश के गूजर दसवी शताब्दी में मालवा होते हुए भिनमाल (राजस्थान) से आये थे। खानदेश के गूजरों को आज भी याद हैं कि वो बैल गाडियों में सवार होकर मालवा होते हुए भिनमाल से आये थे। उपरोक्त कथन के अनुसार गुजरात के पाटीदार खानदेश से गए तो उनका भी आगमन 'भिनमाल' राजस्थान से ही हुआ। चीनी यात्री हेन सांग (629-45 ई.) के अनुसार ' 'भिनमाल सातवी शताब्दी में गुर्जर राज्य 'गुर्जर देश' की राजधानी थी। नक्षत्र विज्ञानी ब्रह्मगुप्त के अनुसार यहाँ का राजा चप वंश (आधुनिक चप राणा) का व्याघ्रमुख था।

राजस्थान के गूजरों में लौर/लेवा गूजरों की उत्पत्ति के विषय में एक कथा परंपरा यह भी प्रचलित हैं कि लौहकोट के राजा कनकसेन (कनिष्क 78-101 ई.) ने आधुनिक राजस्थान के इलाकों को जीत लिया। कनकसेन/कनिष्क के साथ लौह कोट से आने के कारण वे लौर कहलाये।

अत: गुजरात के पाटीदारो का इतिहास महाराष्ट्र के खानदेश, मालवा, भिनमाल (राजस्थान) होते हुए लाहौर, पंजाब तक आता हैं। गुजरात के पाटीदार पंजाब से आये हैं ऐसी ही उनके भाटो का भी कहना हैं। यही सामाजिक मान्यता भी हैं, इसी वजह से मस्तराम कपूर, राजमोहन गाँधी, गायत्री एम. दत्त, मधु लिमये और के. एल. पंजाबी आदि लेखकों ने सरदार पटेल को लेवा गूजर जाति का लिखा हैं।

Notes and References

इरावती कर्वे, हिंदू समाज और जाति व्यवस्था, नई दिल्ली, 1975, पृ 18

बॉम्बे गजेटियर, खंड 9 भाग 1, 1889, पृ. 154

वहीं गुजरात के अलावा महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और बिहार में भी किसान जातियों के जाति पुंज हैं। महाराष्ट्र में किसान जातियों के पुंज को कुनबी कहते हैं, इसमें तीन अलग-अलग जाति समूह हैं- तिरोले कुनबी, माना कुनबी और गूजर कुनबी7 गूजर कुन्बियो में लेवा गूजर भी हैं7 इसी प्रकार उत्तर प्रदेश में भी किसान जातियों का एक कुर्मी नामक जाति पुंज जिसमे सचान, गंगवार, कटियार आदि अंतर्विवाही जाति समूह हैं। एक जाति पुंज के अंतर्गत आनेवाली जातियों भिन्न-भिन्न उत्पत्ति की होती हैं तथा इनमे अधिकांश के किसी क्षेत्र में आबाद होने के काल भी भिन्न-भिन्न होते हैं।

इरावती कर्वे, हिंदू समाज और जाति व्यवस्था, नई दिल्ली, 1975, पृ. 20

आर. एस. शर्मा, अर्ली मेडिएवल इंडियन सोसाइटी, कोलकाता, 2003, पृ. 87 https://books.google.co.in/books?id=i_sIEvsOzkwC&printsec=frontcover#v=onepage&q&f=false

बॉम्बे गजेटियर, खंड 9 भाग 1, 1889, पृ. 155

Patels are divided into two sub-division Leva and Kadwa. In this district Leva Patels are mainly found. Gujarati Patels claim to be of Kshatriya stock. They are Gujjars and came from Punjab.- वडोदरा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, अहमदाबाद, 1979, पृ.17

के. एल. पंजाबी, इनडोमिटेबल सरदार, पृ 4

Kanbis are of the great conquering White Huna tribe of Gurjjaras or Mihiras who during the second half of the sixth century passed through the Panjab and settled in Malwa and Bombay Gujarat. The earliest settlement to which local traditions refer seems to be during first and second century A.D. the southern progress of the great Kushan or Shaka tribe whose most famous leader was Kanaksen or Kanishka, the founder of 78 A.D. era. Like the Kushans the Mihiras and White Hunas are frequently referred as Sakas. Their common Central Asian origin, similarity of their History in India, the fact that latter horde succeeded much of the territory of the earlier horde, and probable marriage connection between both chiefs and the people e&plain how the si&th century White Huna conquerors adopted as their own the legends the History of their predecessors the Sakas or Kushans- बॉम्बे गजेटियर, खंड IX भाग I, 1889, पृ. 154

The division of Lava, Laur or Lor together with less important branch of Khari , Kharia or Khadwa have the special value of showing what has been carefully concealed in Gujarat that the

great body of Patidars and Kanbis in North Gujarat and in Broach are Gujars by descent.

– बॉम्बे गजेटियर, खंड IX भाग II, 1889, पृ.491

It is not uncommon at Dwarka to find that Kanbis of north Gujarat and Gujars from the Punjab satisfy themselves that the both are of same stock.– बॉम्बे गजेटियर, खंड 9 भाग 1, 1889, पृ. 154

"The following statement made at Junagadh in January 1889 by Mr Himmatbhai Ajabhai Vahivatdar of Junagadh a Nadiad Patidar by caste seems to settle the question of Gujar origin of the Patidars and Kanbis of Bombay Gujarat.- I am satisfied that Gujarat Kanbis and Patidars both Lavas and Khandwas are Gujars. We have nothing written about it, but the bards and the family recorders know it, both lavas and Khandwas came from Punjab, this is old people talk.The bhats and waiwanchers say, We left the Punjab 20 generation ago. A famine drove us from Punjab into the land between the Jamna and the Ganga. About vz generation ago the Lavas came to Ahemdabad , it is through Khandesh and brought with them Khandeshi tobacco. The Kanbi weavers in Ahemdabad, Surat and Bhroach did not come with the lavas. The first place they came to to was Champanair. We can still know that we are the same as Punjab Gujars. We have the same way of tilling, our plough is the same, our turban is the same and we use the manure in the same way. Our marriage custom are the same, both of us wear sword at marriage. Ramchandara had two sons. From Lava came Levas and from Kush the Khandwas. I have talked with Punjab Gujars at Dwarka, they say they have Bhagdari and Narwadari villages. बॉम्बे गजेटियर, खंड 9 भाग 1, 1889, पृ. 492 वही, पृ. 491

रमाशंकर त्रिपाठी., हिस्ट्री ऑफ एंशिएंट इंडिया, दिल्ली, 1987, पृ. 319

वही बॉम्बे गजेटियर, खंड IX भाग II, 1889, पृ.491

मधु लिमये, सरदार पटेल- सुव्यवस्थित राज्य के प्रणेता, दिल्ली, 1993, पृ.8

डब्लू. पी.सिनक्लेर, रफ नोट्स ओन खानदेश, दी इंडियन एंटीक्वैरी, दिल्ली 1875 पृ. 108-110 (b) Kunbis, who form the bulk of the Khandesh population, belong to two main divisions, local and Gujar Kunbis. Gujar Kunbis include eight classes, Revas properly Levas, Dores, Dales, Garis, Kadvas, Analas, Londaris, and Khapras..... Reve Gujars are found in Dhulia, Amalner, Savda, Raver, and Shahada. They are said to be the same as the Reves or Levas of the Charotar between Ahmedabad and Baroda..... Kadve Gujars, found in Songir, Burhanpur, and Nimar, have the same peculiar custom as Gujarat Kadvas, celebrating marriages only once in twelve years. The shrine of their chief deity, Umiya, is at Oja, about fourteen miles from Visnagar and si&ty north of Ahmedabad. Numerous priests and Kadve representatives attend the shrine about si& months before the marriage time to fi& the day and hour for the ceremony. On these occasions, so great is the demand for wives, that infants of even one month old are married.https://gazetteers.maharashtra.gov.in/cultural.maharashtra.gov.in/english/gazetteer/Khandesh%20District/population_race.html#1

The Gujars of the north Khandesh, who during the tenth century, moved from Bhinmal in in south Marwar through Malwa into Khandesh include the following divisions Barad, Bare, Chawade, Dode, Lewe and Rewe– बॉम्बे गजेटियर, खंड 9 भाग 1, 1889, पृ. 492

खानदेश गजेटियर, XII, बी. एन.पुरी, दी हिस्टरी ऑफ गुर्जर प्रतिहार, नई दिल्ली, 1996,

Among the tradition adopted was the story of the conquest of the country by the Kanaksen, apparently the family of kanishka (A.D.78) the great Saka or Kushan. Kanaksenis said to have come from Lohkot. This has been taken to be Lahore.– बॉम्बे गजेटियर, खंड 9 भाग 1, 1889, पृ. 491

मस्तराम कपूर, सरदार पटेल स्मारक की भूली हुई कहानी, (लेख) अमर उजाला, 4 नवंबर 2000

गायत्री एम. दत्त, सरदार वल्लभ भाई पटेल, कॉम्पटीशन सक्सेस रिव्यू, जुलाई 1985.

मधु लिमये, सरदार पटेल : सुव्यवस्थित राज्य के प्रणेता, दिल्ली, 1993, पृ.8

के. एल. पंजाबी, इनडोमिटेबल सरदार।

परम प्रिया परम प्रेमानन्द प्रदाता

श्रीमद् भागवत गीता में श्री राधा कृष्ण एवं गोपियों के बीच ब्रजभूमि में रासलीला का वर्णन प्राप्त होता है। रासलीला में राधा सहित सभी गोपीया श्री कृष्ण को अपने साथ रास करता हुआ पाती है। यह भी उल्लेख प्राप्त होता है कि वृंदावन बिहारी के मंदिर में स्त्रियों का प्रवेश वर्जित था, एक समय जब मीरा वृंदावन बिहारी के दर्शन करने के लिए वृंदावन पहुंचीं, तो प्रहरियों ने मीरा को मंदिर में यह कहकर प्रवेश नहीं करने दिया कि गोस्वामी जी के आदेश से मंदिर में स्त्रियों का प्रवेश वर्जित है। इस पर मीरा ने कहा तब तो मैं अवश्य मंदिर में जाऊंगी! मैंने तो सुना है पुरुष एकमात्र श्री कृष्ण है यह गोस्वामी दूसरा पुरुष कहां से आ गया। उसके तो दर्शन करने चाहिए। तुम अपने गोस्वामी जी से जाकर कह दो। एक स्त्री मंदिर द्वार पर आप जैसे पुरुष के दर्शन करने आई है, उसका कहना है कि पुरुष तो एकमात्र श्री कृष्ण ही है।

जब मंदिर के प्रहरियों ने यह बात गोस्वामी जी को बताई तो वे दौड़े-दौड़े आए और मीरा के चरणों में दंडवत प्रणाम किया।

तात्पर्य यह है कि ब्रह्मांड में पुरुष तो केवल मात्र श्री कृष्ण ही है बाकी सभी तो गोपी भाव को प्राप्त जीवात्माएं हैं। हम साहित्य और शिल्प कला में आलिंगनबद्ध स्त्री पुरुष देह प्रतीक प्रणय युगल मूर्ति अथवा चित्रों को देखते हैं। वह सब युगल प्रेम रसामूर्ति प्रकृति और पुरुष के अंतर्मिलन अंतरंग जीवात्मा और परमात्मा के प्रेम को दर्शाती प्रतीकात्मक अभिव्यक्तियां है। जिसमें अंतर्निहित दांपत्य जीवन आदर्श अर्थात अंतरंग मैत्री प्रेम और विवाह के प्रयोजन का सार्थक संदेश है।

यथार्थ में दृश्य संसार में प्रियतम परमात्मा है और जीव परम प्रिया जीवात्मा है। हम संसार में जिन स्त्री-पुरुष शरीरों को देखते हैं, ज्ञान नेत्र वाले जानते हैं। उनके अंतरंग दोनों में पुरुष (नर) स्वरूप परम प्रेमी परमात्मा है। स्त्री पुरुष लैंगिक संरचना तो जीव शरीर की है ,जो जन्म-जन्मांतर में कर्म वश स्त्री -पुरुष लिंग शरीर ग्रहण करता है। जब इन लिंग शरीरों का विध्वंश हो जाता है, तभी परम प्रेम अथवा दिव्यत्व प्राप्ति वाले महापुरुषों को प्राप्ति होना कहा गया है। इसी स्थिति को कैवल्य, मोक्ष और सच्चिदानंद भी कहा गया है।

अंतर्यामी अंतरंग अंतर्मिलन तरंग
राधे-राधे

अंतर्मन अंतरंग प्रिया चाहत है,
दिल से दिल में लगी? लगन जो है।
आखिर क्यों है, मेरे दिल का यह आलम,
अब तू ही बता! क्या हमारा होगा संगम।

यथार्थ में अंतरंग स्वरूप से स्त्री पुरुष एक इकाई के दो पहलू हैं। दोनों एक दूसरे के लिए परस्पर पूरक है। दोनों परस्पर अंतरंग आकर्षण तंत्र में बंधे हैं। कोई भी स्वतंत्र नहीं है। आंतरिक दृष्टि से दोनों एक होते हुए भी शारीरिक दृष्टि से प्रथक प्रथक है। इनमें एक ग्राहक और एक दाता है। दोनों का सृजन दिव्य ऊर्जा तरंगों से हुआ है। यह भी सत्य है कि पुरुष की अंतरंग ऊर्जा बाहरी स्त्री की ओर प्रवाहित रहती है, बाहरी स्त्री देह बाहरी पुरुष देह को ऊर्जा दे नहीं सकती परंतु उसके माध्यम से अंतरंग पुरुष की ऊर्जा को ग्रहण कर सकती है। अंतरंग स्त्री पुरुष ऊर्जा का बाहर की ओर अविरल प्रवाह दृश्य संसार का सृजन है और भीतर की ओर प्रवाह अंतरंग प्रणय युगल तत्व दिव्य संगम प्राप्ति है।

ब्रह्मांड जीव सृष्टि रचना में यही दिव्य देही जीव का देह धारण करने का प्रयोजन दिव्यांशी प्रेम देव अनंग अनादि चिति प्रज्ञा प्रेम रति- प्रीति द्वारा (लय गच्छती इति लिंगम) पश्चात दिव्य देह प्राप्ति है।

वरिष्ठ नागरिक परिसंघ की राष्ट्रीय कार्यसमिति की 20वीं बैठक हुबली (कर्नाटक) में सम्पन्न हुई

भारतीय मजदूर संघ से सम्बद्ध वरिष्ठ नागरिक परिसंघ राष्ट्रीय कार्यसमिति की 20वीं बैठक हुबली में राष्ट्रीय अध्यक्ष रवि रमण की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। कार्यसमिति की बैठक का उद्घाटन मंचस्थ अतिथियों द्वारा किया गया। जिनमें भारतीय मजदूर संघ कर्नाटक प्रदेश के महामंत्री अधिवक्ता श्री एच.एल. विश्वनाथ, वरिष्ठ नागरिक परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष रवि रमण, महामंत्री चन्द्रकान्त देशपांडे, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री मार्गदर्शक वसन्त पीपळापुरे, कर्नाटक वरिष्ठ नागरिक परिसंघ प्रदेश महामंत्री बाबूराव उपस्थित रहे। वरिष्ठ कार्यकर्ता वसन्त पीपळापुरे ने अपने उद्बोधन में कहा वरिष्ठ नागरिक परिसंघ सामाजिक कार्य से जुड़ा हुआ है। वरिष्ठ नागरिक विविध समस्याओं से ग्रसित हैं। जिनमें पारिवारिक, सामाजिक, स्वास्थ्य, आर्थिक और सबसे गम्भीर अकेलेपन की समस्या से त्रस्त हैं। विविध न्यायालयों में लगभग 7 लाख केस न्याय निर्णय हेतु लम्बित हैं। इससे हम समझ सकते हैं कि वरिष्ठ नागरिकों की मानसिकता कितनी प्रभावित हो रही है। विविध समस्याओं से त्रस्त वरिष्ठ नागरिकों की संख्या 65 प्रतिशत से अधिक है। वरिष्ठ नागरिक स्वयं आगे बढ़कर स्वयं की शक्ति के आधार पर राष्ट्र को सर्वोपरि मानकर कार्य करेंगे।

वरिष्ठ नागरिक अनुभव ज्ञान और इच्छा शक्ति के आधार पर समाज में विशेष स्थान प्राप्त कर सकते हैं। परिसंघ इसी दिशा में कार्य कर रहा है। भाजपा नेता चन्द्रशेखर गोकाक ने कहा आप अपने आपको वरिष्ठ कहते हो किन्तु आपका उत्साह देखकर आप वरिष्ठ लगते नहीं है। इसलिये समाज को आपसे बहुत अपेक्षाएं हैं। अध्यक्षीय उद्बोधन में मार्गदर्शन करते हुए रवि रमण ने कहा- कार्यकर्ता संगठन का आधार है। कार्यकर्ता की सक्रियता ही संगठन को आगे ले जा सकती है। संगठन रूपी दीपक में निरन्तर तेल डालने का कार्य कार्यकर्ता करते हैं। यही कारण है कि वरिष्ठ नागरिक परिसंघ कम समय में ही 22 प्रान्तों में अपना कार्य विस्तार करने में सफल हुआ है। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ नागरिक परिसंघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विवेक पाण्डे ने किया।

वरिष्ठ नागरिक परिसंघ दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यसमिति की बैठक 8 सत्रों में सम्पन्न हुई। बैठक में पूर्व बैठक की कार्यवाही वृत्त एवं आय-व्यय विवरण प्रस्तुत किया गया। जिसे कार्यसमिति द्वारा विचार-विमर्श पश्चात् सर्वसम्मति से पारित किया गया। संगठनात्मक आर्थिक सुदृढ़ता एवं भारतीय मजदूर संघ के प्रस्तावित 6-7-8 फरवरी जगन्नाथपुरी में

सम्पन्न होने वाले अधिवेशन में राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्यों के प्रतिनिधित्व पर विचार-विमर्श हुआ। राष्ट्रीय पदाधिकारियों के प्रवास कार्यक्रम, संगठन विस्तार तथा प्रदेश स्तर पर संगठन की सदस्यता पर चर्चा हुई। वर्ष 2026 के लिये कार्ययोजना पर विचार-विमर्श पश्चात् कई निर्णय लिये गये।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष में चल रहे पंच परिवर्तन पर पूर्व महामंत्री वसंत पीपळापुरे ने विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। जिनमें पर्यावरण, कुटुम्ब, स्वदेशी जागरण इत्यादि सम्मिलित हैं। प्रदेश स्तर पर सदस्यता अभियान प्रारम्भ करने का निर्णय लिया गया। वरिष्ठ नागरिकों से सम्बन्धित अनेक विषय जो सरकार के पास विचाराधीन हैं। ईपीएफ 95 एवं पेंशनर्स से सम्बन्धित विविध विषयों पर विस्तृत चर्चा हुई। प्रदेश स्तर पर भारत सरकार द्वारा वरिष्ठ नागरिकों को रेलवे में सुविधा को पुन: बहाल करने की मांग को लेकर सभी प्रदेशों में आन्दोलनात्मक कार्यवाही आगामी वर्ष में शुरु करने का निर्णय लिया गया।

आगामी राष्ट्रीय कार्यसमिति की बैठक उत्तरप्रदेश में झांसी में आयोजित करने का निर्णय लिया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष रवि रमण ने अपने उद्बोधन में सभी प्रदेशों में संगठन विस्तार हेतु सम्पर्क सेवा और संवाद कार्यक्रमों को गति प्रदान करने का आह्वान किया। उन्होंने कार्यकर्ताओं से कहा- वरिष्ठ नागरिकों की सेवा, संवाद और सम्पर्क कार्यक्रम आसान नहीं है। इसके लिये हमें धैर्यपूर्वक दृढ़ निश्चय के साथ संकल्प बल से आगे बढ़ते हुए वरिष्ठ नागरिकों के सेवा कार्य को प्रत्येक प्रदेश में आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। इसके लिये सेवा करते हुए ही हमें सेवा का भाव रखने वाले कार्यकर्ताओं को संगठन में शामिल करना है। प्रत्येक कार्यकर्ता अपने निकटतम परिवारजनों को भी संगठन का सदस्य बनायें। तभी हम सही मायने में संगठन कार्य को कुशलतापूर्वक अंजाम दे सकेंगे।

बैठक के समापन के अवसर पर स्थानीय व्यवस्थाओं एवं स्थानीय कार्यकर्ताओं का स्वागत एवं आभार प्रकट किया गया। स्मृति में यह भी लाया गया कि आने वाले समय में 2030 तक वरिष्ठों की संख्या 20 करोड़ होने वाली है। उनकी समस्यायें भी अनेक होने वाली है। वरिष्ठों के मान-सम्मान परिवार में उनकी स्थिति तथा आर्थिक व्यवस्था सम्बन्धी स्थितियों को भी ध्यान में रखते हुए हमें उनके बीच में कार्य करने की आवश्यकता है। अध्यक्षीय उद्बोधन में जानकारी दी गई कि परिसंघ का कार्य देश के 23 प्रान्तों में है जिनमें से 22 प्रदेशों में कार्यसमितियों का गठन हो चुका है। 16 प्रदेश परस्पर सम्पर्क में है। वरिष्ठ नागरिक परिसंघ की 30.11.2025 तक आजीवन सदस्य संख्या 7 हजार+ है। आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- है। वरिष्ठ नागरिक परिसंघ का राष्ट्रीय अधिवेशन जयपुर में 19-20 मार्च, 2025 को सम्पन्न हुआ जिसमें 312 प्रतिनिधि उपस्थित रहे। महिला प्रतिनिधियों की संख्या 45 रही। अधिवेशन में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रविरमण मुम्बई को चुना गया। राष्ट्रीय महामंत्री चन्द्रकान्त देशपांडे नागपुर को व वित्त सचिव श्री विनोद किन्नेकर नागपुर को चुना गया। वरिष्ठ नागरिक परिसंघ से 17 पेंशन यूनियनें एफिलियेटेड हैं। जिनकी सदस्य संख्या लगभग 37 हजार है।

राजस्थान प्रदेश से राष्ट्रीय मंत्री प्रहलाद सिंह अवाना, उपाध्यक्ष एन.एल. योगी, राजस्थान प्रदेश वरिष्ठ नागरिक परिसंघ के अध्यक्ष विद्याधर शर्मा, महामंत्री मोहन लाल वर्मा, राजस्थान पथ परिवहन पेंशनर्स यूनियन के सदस्य रामसिंह ने भाग लिया।

जिन्दगी भर स्वस्थ और प्रसन्नचित्त रहने के लिये कदम से कदम मिलाकर चलते रहें

कथन है- वृद्धावस्था पैरों से शुरु होती है। प्रत्येक व्यक्ति को लगभग एक घंटे पैदल चलने के लिये प्रयत्नशील रहना चाहिये। वरिष्ठ नागरिकों के लिये खासतौर से यह महत्वपूर्ण व्यायाम है।

बुढ़ापा पैरों से शुरू होकर ऊपर की ओर बढ़ता है ! अपने पैरों को सक्रिय और मजबूत रखें।

जैसे-जैसे हम ढलते जाते हैं और रोजाना बूढ़े होते जाते हैं, हमें पैरों को हमेशा सक्रिय और मजबूत बनाए रखना चाहिए।

हम लगातार बूढ़े हो रहे हैं, वृद्ध हो रहे हैं, मगर हमें बालों के भूरे होने, त्वचा के झड़ने (या) झुर्रियों से डरना नहीं चाहिए।

दीर्घायु के संकेतों में, जैसा कि अमेरिकी पत्रिका प्रिवेंशन (रोकथाम) में मजबूत पैर की मांसपेशियों को शीर्ष पर सूचीबद्ध किया गया है, क्योंकि यह सबसे महत्वपूर्ण और आवश्यक है।

यदि आप दो सप्ताह तक अपने पैर नहीं हिलाते हैं, तो आपके पैरों की ताकत 10 साल कम हो जाएगी। यानी आप दस साल बूढ़े हो जाएंगे।

डेनमार्क में कोपेनहेगन विश्वविद्यालय के एक अध्ययन में पाया गया कि वृद्ध और युवा दोनों, निष्क्रियता के दो हफ्तों के दौरान, पैरों की मांसपेशियों की ताकत एक तिहाई कम हो सकती है जो 20 से 30 साल की उम्र के बराबर है।

जैसे-जैसे हमारे पैर की मांसपेशियां कमजोर होती जाती हैं, ठीक होने में लंबा समय लगता है, भले ही हम बाद में पुनर्वास और व्यायाम करें।

इसलिए, चलने जैसे नियमित व्यायाम बहुत जरूरी हैं।

पूरे शरीर का भार पैरों पर रहता है और शरीर आराम करता है। पैर एक प्रकार के स्तंभ हैं, जो मानव शरीर के पूरे भार का वहन करते हैं।

दिलचस्प बात यह है कि किसी व्यक्ति की 50% हड्डियाँ और 50% मांसपेशियाँ दोनों पैरों में ही होती हैं। मानव शरीर के सबसे बड़े और मजबूत जोड़ और हड्डियां भी पैरों में होती हैं।

मजबूत हड्डियां, मजबूत मांसपेशियां और लचीले जोड़ 'आयरन ट्राएंगल' का निर्माण करते हैं जो सबसे महत्वपूर्ण भार यानी मानव शरीर को वहन करता है।

70% मानव गतिविधियां और कैलोरी बर्निंग इन्हीं दो पैरों से होते हैं।

क्या आप यह जानते हैं? जब इंसान जवान होता है तो उसकी जांघों में इतनी ताकत होती है कि वह 800 किलो की छोटी कार को उठा सके।

पैर शरीर की हरकत का केंद्र है।

दोनों पैरों में मिलकर मानव शरीर की 50% नसें, 50% रक्त वाहिकाएं और 50% रक्त उनमें से बहता है। यह सबसे बड़ा संचार नेटवर्क है जो शरीर को जोड़ता है।

केवल जब पैर स्वस्थ होते हैं तब रक्त की कन्वेंशन धारा सुचारू रूप से प्रवाहित होती है, इसलिए जिन लोगों के पैर की मांसपेशियां मजबूत होती हैं, उनका हृदय निश्चित रूप से मजबूत होता है।

बुढ़ापा पैरों से ऊपर की ओर जाता है।

जैसे-जैसे व्यक्ति बूढ़ा होता है, मस्तिष्क और पैरों के बीच निर्देशों के संचरण की सटीकता और गति कम होती जाती है, इसके विपरीत जब कोई व्यक्ति युवा होता है तो यह बहुत तेज और सटीक होती है।

इसके अलावा, तथाकथित अस्थि उर्वरक (कैल्शियम)

समय बीतने के साथ खो जाएगा, जिससे बुजुर्गों को हड्डियों के फ्रैक्चर का खतरा अधिक हो जाएगा।

बुजुर्गों में अस्थि भंग आसानी से जटिलताओं की एक श्रृंखला को ट्रिगर कर सकता है, विशेष रूप से घातक रोग जैसे मस्तिष्क घनास्त्रता।

क्या आप जानते हैं कि आम तौर पर 15 फीसदी बुजुर्ग मरीजों की जांघ की हड्डी में फ्रैक्चर के एक साल के भीतर मौत हो जाती है?

पैरों की एक्सरसाइज करने में कभी देर नहीं करनी चाहिए, 60 साल की उम्र के बाद भी यदि आप नियमित व्यायाम करें तो परिणाम चौंकाने वाले होते हैं।

हालांकि समय के साथ हमारे पैर धीरे-धीरे बूढ़े हो जाएंगे, लेकिन हमें पैरों का व्यायाम करना जीवन भर का काम बना लेना चाहिए।

केवल पैरों को मजबूत करके ही आगे बढ़ती उम्र को रोका या कम किया जा सकता है।

कृपया रोजाना कम से कम 30-40 मिनट टहलें ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि आपके पैरों को पर्याप्त व्यायाम मिले और यह सुनिश्चित हो सके कि आपके पैरों की मांसपेशियां स्वस्थ रहे।

आयुगत मनो शारीरिक परिवर्तन चक्र

मनुष्य के शरीर में कई बीमारियाँ वास्तव में बीमारियाँ नहीं होतीं, बल्कि सामान्य उम्र संबंधी परिवर्तन होती हैं।

बीजिंग के एक अस्पताल के निदेशक ने बुजुर्गों के लिए पाँच महत्वपूर्ण सलाहें दी हैं-

> आप बीमार नहीं हैं, आप बस बूढ़े हो रहे हैं।

बहुत-सी बीमारियाँ जिन्हें आप बीमारी समझते हैं, वे वास्तव में शरीर के वृद्ध होने के संकेत हैं।

1. कमजोर याददाश्त

यह अल्जाइमर नहीं है, बल्कि बुजुर्ग मस्तिष्क की एक स्व-सुरक्षात्मक प्रक्रिया है।

डरिए मत- यह बीमारी नहीं, मस्तिष्क की उम्र बढ़ने की प्रक्रिया है।

यदि आप चाबी कहाँ रखी भूल जाएँ, लेकिन थोड़ी देर में ढूँढ लें- तो यह डिमेंशिया नहीं है।

2. धीरे चलना या पैर डगमगाना

यह लकवा नहीं है, बल्कि मांसपेशियों के क्षीण होने का परिणाम है।

इसका इलाज दवा नहीं, बल्कि व्यायाम है।

3. अनिद्रा (नींद न आना)

यह बीमारी नहीं है, बल्कि मस्तिष्क अपनी लय बदल रहा है।

यह नींद की संरचना में बदलाव है।

नींद की गोलियाँ बिना सोचे-समझे न लें-

लंबे समय तक इन पर निर्भरता से गिरने, स्मरणशक्ति घटने आदि का जोखिम बढ़ता है।

बुजुर्गों के लिए सबसे अच्छी नींद की दवा है ङ्क धूप लेना और नियमित दिनचर्या बनाए रखना।

4. शरीर में दर्द

यह गठिया नहीं, बल्कि नसों के वृद्ध होने की सामान्य प्रतिक्रिया है।

5. हाथ-पैर या शरीर में दर्द

बहुत-से बुजुर्ग कहते हैं- मेरे हाथ-पैर दुखते हैं, क्या यह गठिया या हड्डियों की बढ़वार है?

हड्डियाँ ढीली और पतली जरूर होती हैं, पर 99% दर्द बीमारी नहीं होता।

यह नसों की गति धीमी होने से दर्द की संवेदना बढ़ने का परिणाम है,

जिसे सेंट्रल सेंसिटाइजेशन कहते हैं- यह वृद्धावस्था का सामान्य शारीरिक परिवर्तन है।

दर्दनाशक दवाएँ समाधान नहीं हैं।

व्यायाम व फिजिकल थेरेपी सबसे उपयोगी उपाय हैं।

सोने से पहले पैरों का गर्म पानी से स्नान, गर्म सेंक और हल्की मालिश दवा से ज़्यादा प्रभावी हैं।

6. जाँच रिपोर्ट में असामान्यता

यह हमेशा बीमारी का संकेत नहीं होती, बल्कि मानक सूचकांक पुराने हो सकते हैं।

7. विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की सलाह है कि बुजुर्गों के लिए स्वास्थ्य जाँच के मानदंड लचीले होने चाहिए।

उदाहरण के लिए, बुजुर्गों में थोड़ा अधिक कोलेस्ट्रॉल लंबी

उम्र का संकेत हो सकता है, क्योंकि कोलेस्ट्रॉल हार्मोन व कोशिका झिल्ली बनाने का मूल पदार्थ है।

बहुत कम स्तर से प्रतिरक्षा घटती है।

चीन के हाइपरटेंशन प्रिवेंशन एंड ट्रीटमेंट गाइडलाइन में कहा गया है कि बुजुर्गों के लिए रक्तचाप की सीमा 150/90 मिमी ॥द्द से कम पर्याप्त है,

युवाओं की तरह 140/90 की ज़रूरत नहीं।

वृद्धावस्था को बीमारी न समझें,

परिवर्तन को विकार न मानें।

8. बुढ़ापा कोई बीमारी नहीं- यह जीवन की अनिवार्य यात्रा है।

बुजुर्गों और उनके बच्चों के लिए तीन बातें :

1. याद रखें- हर असुविधा बीमारी नहीं होती।

2. बुजुर्गों के लिए सबसे बड़ा खतरा है डरना।

रिपोर्ट देखकर घबराएँ नहीं, न ही विज्ञापनों के जाल में फँसें।

3. बच्चों का सबसे बड़ा कर्तव्य केवल अस्पताल ले जाना नहीं, बल्कि माता-पिता के साथ टहलना, धूप में बैठना, भोजन करना, बात करना और समय बिताना है।

> बुढ़ापा दुश्मन नहीं है — यह जीवन का दूसरा नाम है,

लेकिन ठहराव (stagnation) दुश्मन है।

स्वस्थ रहें।

यह संदेश स्वास्थ्य मनोविज्ञान की समझ के लिए पढ़ने योग्य है।

एक ब्राजीली ऑन्कोलॉजिस्ट (कैंसर विशेषज्ञ) के विचार:

1. बुढ़ापा 60 वर्ष से शुरू होकर 80 तक रहता है।

2. अति बुढ़ापा 80 से 90 तक।

3. दीर्घायु 90 के बाद से मृत्यु तक।

बुजुर्गों की सबसे बड़ी समस्या है- एकाकीपन (Loneliness)।

अक्सर पति-पत्नी साथ-साथ बूढ़े नहीं होते, कोई एक पहले चला जाता है।

विधवा या विधुर परिवार पर बोझ बन जाते हैं।

इसलिए आवश्यक है कि दोस्तों से संबंध बनाए रखें,

मिलते-जुलते रहें ताकि बच्चों पर भार न बनें।

कुछ व्यक्तिगत सुझाव :

अपनी जिन्दगी का नियंत्रण कभी न खोएँ।

स्वयं तय करें- कब और किससे मिलना है, क्या खाना है, क्या पहनना है, क्या पढ़ना है, कब सोना है आदि।

यदि आप यह स्वतंत्रता खो देंगे तो आप दूसरों पर बोझ बन जाएँगे।

विलियम शेक्सपीयर ने कहा था-

> मैं हमेशा खुश रहता हूँ!

क्यों? क्योंकि मैं किसी से अपेक्षा नहीं रखता।

अपेक्षा हमेशा दुख देती है।

कोई भी समस्या स्थायी नहीं होती- हर समस्या का हल होता है।

एक ही चीज़ का इलाज नहीं- मृत्यु।

जीवन के कुछ सूत्र :

प्रतिक्रिया देने से पहले- गहरी साँस लें।

बोलने से पहले- सुनें।

आलोचना करने से पहले- स्वयं को देखें।

लिखने से पहले- सोचें।

आक्रमण करने से पहले- समर्पण करें।

मरने से पहले- जीवन को सुंदरतम रूप से जिएँ।

सर्वश्रेष्ठ संबंध संपूर्ण व्यक्ति के साथ नहीं,

बल्कि ऐसे व्यक्ति के साथ होता है जो सीख रहा है और जीवन को सुंदरता से जी रहा है।

दूसरों की कमियाँ देखें, पर उनके गुणों की प्रशंसा करना न भूलें।

यदि आप खुश रहना चाहते हैं-

किसी और को खुश करें।

यदि आपको कुछ चाहिए-

पहले कुछ देना सीखें।

अपने चारों ओर अच्छे, दिलचस्प और स्नेही लोगों को रखें-

और स्वयं भी वैसे बनें।

याद रखें :

कठिन समय में, आँसू भरी आँखों से भी मुस्कुराते हुए कहें -

> सब ठीक है, क्योंकि हम एक विकासशील यात्रा के फल हैं।

एक छोटा परीक्षण :

यदि आप यह संदेश किसी को नहीं भेजते-

तो आप अकेले और दुखी हैं।

इसे उन लोगों को भेजिए जिन्हें आप महत्त्व देते हैं-

आप इसे कभी नहीं भूलेंगे।

शेखावाटी के गांधी बजरंग लाल धाभाई (मण्डावा) के पौत्र अशोक धाभाई का विवाह हर्षोल्लास से जयपुर में सम्पन्न हुआ

जयपुर। शेखावाटी के गांधी नाम से पहचाने जाने वाले बजरंग लाल धाभाई राजस्थान ओबीसी आयोग के पूर्व सदस्य भाजपा नेता के पौत्र द्विपेंद्र पुत्र अशोक का विवाह जयपुर में किशनगढ़ निवासी अंजलि पुत्री स्वर्गीय अमित गुर्जर के साथ मंगलवार, 25 नवम्बर, 2025 को धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

विवाह समारोह में झुन्झुनूं, सीकर, जयपुर, अजमेर तथा प्रदेश के विभिन्न स्थानों से समाज के गणमान्य व्यक्तियों एवं जनप्रतिनिधियों ने सम्मिलित होकर वर-वधू को आशीर्वाद प्रदान किया। विवाह समारोह में सिक्किम के राज्यपाल महामहिम ओमप्रकाश माथुर, राजस्थान सरकार में पूर्व मंत्री वित्त आयोग के अध्यक्ष अरूण चतुर्वेदी, स्वायत्त शासन राज्य मंत्री झाबरसिंह खर्रा, गृह राज्यमंत्री जवाहर सिंह बेढ़म, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह प्रान्त प्रचारक विशालजी, फतेहपुर बुधगिरि जी की मढ़ी के महन्त दिनेश गिरिजी, जयपुर (पश्चिम) के पुलिस कमिश्नर राजेश गुप्ता, अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन विशेषज्ञ ठाकुर दुर्गा सिंह मंडावा, हरियाणा के मुख्य सूचना आयुक्त प्रदीप सिंह शेखावत, आयकर विभाग भारत सरकार आयुक्त सुनीता बैंसला, स्प्रिंग बोर्ड एकेडमी के स्वामी/निदेशक दिलीप माहिचा, राजस्थान गुर्जर महासभा के कार्यकारी अध्यक्ष मोहन लाल वर्मा, गुर्जर इतिहास साहित्य एवं भाषा शोध संस्थान के राष्ट्रीय सचिव शैतान सिंह गुर्जर, गुर्जर छात्रावास सीकर एवं गुर्जर अधिकारी-कर्मचारी संघ के अध्यक्ष अर्जुन लाल गुर्जर सहित सीकर, झुन्झुनूं राजस्थान गुर्जर महासभा के पदाधिकारी उपस्थित रहे। सभी आगन्तुक अतिथियों ने विवाह के अवसर पर आयोजित सामूहिक भोज ग्रहण किया तथा वर-वधू को आशीर्वाद प्रदान किया।

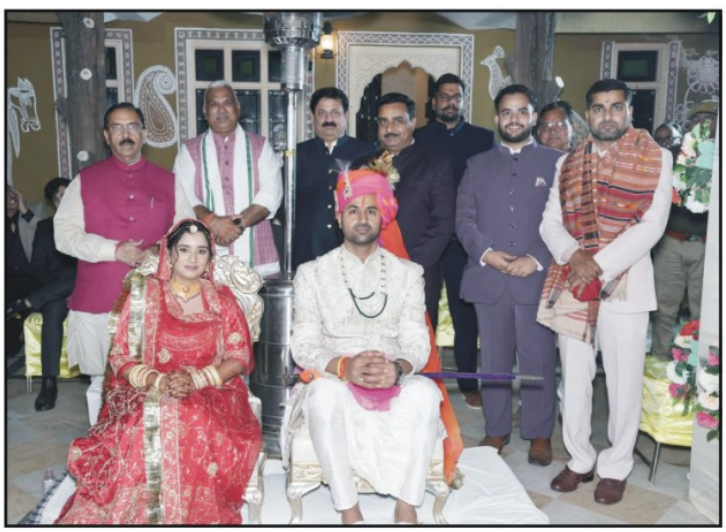

भारत में दाम्पत्य जीवन एवं पारिवारिक विघटन के माध्यम से सामाजिक विघटन की साजिश के प्रति जागरूक रहें

भारत की पारिवारिक, सामाजिक, व्यवस्था को छिन्न भिन्न करने के षड्यंत्र के अन्तर्गत लम्बे समय से उपभोक्ता बाजार संचालनकर्ताओं द्वारा एक घिनौनी साजिश को अंजाम दिया जा रहा है जिसके अन्तर्गत संयुक्त परिवार को तोड़कर उपभोक्ता वस्तु के रूप में व्यक्ति को रूपान्तरित किया जा रहा है। भारत के प्रति रची जा रही एक खतरनाक साजिश की सच्चाई।

जब परिवार टूटते हैं, तभी बाजार फलते हैं। ये सिर्फ विचार नहीं, पूरी रणनीति है।

भारत की सबसे मजबूत चीज क्या थी? संयुक्त परिवार

भारत में मुग़ल आए, अंग्रेज़ आए और कई हमलावर आए लेकिन एक चीज़ कभी नहीं टूटी, वह है- हमारा संयुक्त परिवार।

हमारा संयुक्त परिवार :

3 पीढ़ियाँ एक छत के नीचे। बुजुर्गों का अनुभव।

बच्चों में संस्कार। खर्च में सामूहिकता।

त्यौहारों में गर्माहट।

द्दयह हमारी असली Social Security थी। कोई पेंशन की ज़रूरत नहीं थी, कोई अकेलापन नहीं, कोई Mental Health Crisis नहीं।

पश्चिम को यह चीज़ क्यों खटकने लगी?

पश्चिमी देश उपनिवेशवादी रहे हैं, उनके लिए बाज़ार सबसे बड़ा धर्म है।

लेकिन भारत जैसा देश, जहाँ लोग साझा करते हैं, कम खर्च करते हैं, और सामूहिक सोच रखते हैं, वहां वे अपने उत्पाद बेच ही नहीं पा रहे थे।

इसलिए एक शातिर रणनीति बनाई गई।

इनके परिवार ही तोड़ दो, हर कोई अकेला हो जाएगा और हर कोई ग्राहक बन जाएगा।

कैसे हुआ ये हमला?

मीडिया के ज़रिए- संयुक्त परिवार को झगड़ों का अड्डा, बोझ और रुकावट के रूप में दिखाया गया।

न्यूक्लियर परिवार को फ्रीडम, मॉर्डन, Self-made बताकर ग्लैमराइज किया गया।

याद कीजिए- टीवी पर कितने शो हैं जहां बहू-सास की लड़ाई दिखती है और सॉल्यूशन होता है, अलग हो जाओ!

उपभोक्तावाद के ज़रिए : उपभोक्तावाद के ज़रिए हर जोड़ा अलग रहने लगा।

1 परिवार = अब 4 घर।

1 टीवी = अब 4 टीवी।

1 रसोई = अब 4 किचन सेट।

1 कार = अब 4 स्कूटर + 2 कार।

बाजार में बूम आ गया और समाज में टूटन।

भारत में क्या हुआ इस विघटनकारी सोच लेवा हमले के बाद?

सामाजिक पतन :

बुजुर्ग अब बोझ हैं।

बच्चे अकेले हैं (स्क्रीन में गुम)

रिश्तेदार उपलब्ध नहीं हैं।

संस्कारों की जगह Influencers ने ले ली।

मानसिक स्वास्थ्य संकट।

पहले जो बात नानी-दादी से होती थी, अब काउंसलर से होती है।

अकेलापन अब इलाज़ मांगता है, पहले प्यार से दूर होता था।

बाजार का फायदे :

हर समस्या का एक उत्पाद।

हर भावना का एक ऐप।

हर उत्सव का एक।

ऑनलाइन ऑर्डर, संस्कार की जगह सब्सक्रिप्शन ने ले ली है।

आज का सवाल, हम क्या बनते जा रहे हैं ..

हमने आधुनिकता की दौड़ में

संयुक्तता को Outdated कहा।

माता-पिता को Obstacles कहा।

परिवार को फालतू भावना कहा।

रिश्तों को Unfollow कर दिया।

क्या आपने सोचा ?

Amazon का फायदा तभी है जब आप Diwali पर अकेले हों और Shopping करें, परिवार के साथ न बैठें। Zomato तभी कमाता है जब कोई माँ का खाना नहीं खा रहा। Netflix तभी देखेगा जब कोई दादी की कहानी नहीं सुन रहा।

हम अभी भी वापसी कर सकते हैं।

संयुक्त परिवार को पुन: संपत्ति मानें, बोझ नहीं।

बच्चों को उपभोक्ता नहीं, संस्कारी इंसान बनाएं।

बुजुर्गों को घर से बाहर न करें, उनके अनुभव हर Google Search से ऊपर हैं।

त्यौहार मनाएं, सामान नहीं।

अकेलापन कम करने के लिए App नहीं, अपनापन बढ़ाइए।

पश्चिम ने व्यापार के लिए परिवार तोड़े और हम आधुनिक बनने के लिए अपना वजूद बेच आए।

अब समय है रुकने का, सोचने का और अपने संस्कारों को फिर से अपनाने का नहीं तो अगली पीढ़ी को संयुक्त परिवार शब्द का अर्थ बताने के लिए भी शायद Google की ज़रूरत पड़ेगी।

गोपालकों के लिए सुनहरी अवसर

गोपालक किसान भाई बहिनों को बड़े हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि गोपालन के सन्दर्भ में उत्कृष्ट मॉडल निर्माण हेतु प्रशिक्षण के लिए ट्रेनर श्री सुरेन्द्र अवाना के द्वारा रुद्र शिवम् डेयरी ग्राम भैराणा, पोस्ट बिचून वाया मौखमपुरा, अजमेर रोड जयपुर में निरंतर हर महीने की 17 तारीख को प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा। इस कार्यक्रम में गोपालन में नस्ल संवर्धन, अपेक्षित दुग्ध उत्पादन की तकनीक, आहार एवं आवास निर्माण व्यवस्था, चारा उत्पादन के साथ स्वास्थ्य प्रबंधन की सरल एवं प्रायोगिक विषय साझा किए जायेंगे। कार्यक्रम में समस्त चर्चा डेयरी परिसर में ही प्रत्यक्ष दर्शन के साथ की जाएगी, जहाँ आप स्वयं देख पाएंगे कि यहाँ संचालित समस्त गतिविधियों के बारे में कि 20-25 लीटर प्रति दिन दूध प्रति गाय प्राप्त कैसे कर रहे है, कैसे गो स्वास्थ्य का प्रयास सरलता एवं न्यून लागत से किया जा रहा है।

कार्यक्रम 17 दिसम्बर 2025 को प्रात: 9.30 बजे प्रारम्भ होगा। आप अवश्य पधारे।

विशेष : गो पालन के साथ गो आधारित जैविक कृषि की चर्चा भी इस कार्यक्रम में होंगी, 25 तरह के हरे चारे वाले फिल्ड में विजिट भी करवाया जायेगा।

कार्यक्रम में पंजीकरण हेतु - 8949019549 पर अपना नाम पता भेजे। शुल्क-200 रूपये।

प्रात: अल्पाहार एवं दोपहर का भोजन आदि सब यही पर रहेगा। धन्यवाद।

पूरा पता- रुद्र शिवम डेयरी ग्राम भैराणा, पोस्ट बिचून वाया मौखमपुरा, अजमेर रोड जयपुर राजस्थान 303604

रणवीर सिंह - 8949019549

लोकेशन लिंक https://maps.app.goo.gl/eVVfrDUvvzcWsL~cl&

(पंजीकरण के बाद रूट चार्ट बस स्टेशन एवं रेल्वे स्टेशन का अलग से भेज देंगे)

गुर्जर प्रवृत्ति एवं परम्परा में बदलाव की ओर बढ़ते कदम

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में गुर्जर समुदाय की भूमिका एक ऐसे पन्ने की तरह है, जिसे इतिहास ने अक्सर अधूरा छोड़ा। साधारण जीवन जीने वाला यह समुदाय अपनी सहज मानसिकता और आत्मीयता के साथ संघर्ष में उतरा और अंग्रेजी दमन के खिलाफ असाधारण वीरता का परिचय दिया।

धन सिंह गुर्जर, गंगा नंबरदार और सैया गुर्जर जैसे योद्धाओं ने दिखा दिया कि सीमित संसाधन भी बड़े बदलाव ला सकते हैं। उनकी एकता, त्याग और लोकगीतों में संजोई गाथाएँ आज भी प्रेरणा का स्रोत हैं।

लेकिन दुर्भाग्य से वही समुदाय, जिसने कभी 'खून की शाही' रचकर बलिदान की मिसाल दी थी, आज अनेक आशंकाओं और पूर्वाग्रहों के घेरे में सिमटता जा रहा है। संदेह, सामाजिक-आर्थिक असुरक्षा और आपसी अविश्वास जैसी स्थितियाँ उसे उसकी ऐतिहासिक ताक़त-एकजुटता और आत्मसम्मान-से दूर ले जाती हैं। यह बदलाव केवल आंतरिक मनोवृत्ति को ही नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के आत्मविश्वास को भी प्रभावित करता है। जब कोई समाज अपनी गौरवशाली परंपरा से कट जाता है, तो वह बाहरी चुनौतियों के प्रति अधिक असुरक्षित हो जाता है।

गुर्जर समुदाय का जुझारूपन इस बात की याद दिलाता है कि ताक़त हमेशा बाहरी साधनों से नहीं आती, बल्कि भीतर की सामूहिक चेतना से जन्म लेती है। आज समय की माँग है कि यह समुदाय अपने अतीत के शौर्य से प्रेरणा लेकर वर्तमान की चुनौतियों का सामना करे। यदि इतिहास हमें सिखाता है कि साधारण जीवन जीते हुए भी असाधारण कार्य किए जा सकते हैं, तो वर्तमान हमें यह पुकार देता है कि पूर्वाग्रह और आशंकाओं की बेड़ियाँ तोड़कर नए आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ा जाए।

गुर्जर वीरता की परंपरा यह संदेश देती है कि न्याय और स्वाभिमान के लिए खड़ा होना केवल अतीत की ज़रूरत नहीं, बल्कि आज और भविष्य की भी अनिवार्यता है। जब यह समुदाय अपनी सांस्कृतिक शक्ति, एकजुटता और आत्मनिर्भरता को पुन: केंद्र में लाएगा, तब वह न केवल अपने इतिहास का सम्मान करेगा बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी प्रेरणा देगा कि साधारण जीवन में असाधारण उपलब्धियाँ संभव हैं।

खेत से किताब तक : गुर्जर समाज का नया उत्कर्ष

प्रस्तावना : कभी शौर्य और शासन का प्रतीक रहा गुर्जर समाज, आधुनिक काल में पिछड़ेपन के ठप्पे से जूझता रहा। परंतु इस ठप्पे को तोड़ने की छटपटाहट अब समाज की बेटियों और बेटों के संघर्ष में साफ झलक रही है।

भारतीय सांख्यिकी सेवा (ISS) 2025 परीक्षा में गुर्जर समाज की बालिका कशिश का प्रथम स्थान प्राप्त

करना और संभवत: इसी समाज से संबंध रखने वाले अंकित तंवर का शीर्ष दस में नौवाँ स्थान हासिल करना- यह केवल व्यक्तिगत सफलता नहीं, बल्कि समाज की सामूहिक चेतना का बिगुल है।

शिक्षा में नई उड़ान : खेतिहर समाज का जीवन सदा परिश्रम और गणना पर आधारित रहा है। किसान बीज बोने से लेकर फसल काटने तक हर कदम पर धैर्य, योजना और मेहनत का अभ्यास करता है। यही गणनात्मक दृष्टि अब नई पीढ़ी शिक्षा और प्रतियोगिता की दुनिया में अपना रही है।

कशिश ने विद्यालय से लेकर दिल्ली विश्वविद्यालय तक निरंतर उत्कृष्टता दिखाई और अंतत: ISS परीक्षा में शीर्ष स्थान हासिल किया। दूसरी ओर, अंकित तंवर का नौवाँ स्थान भी इस बात का संकेत है कि यह समाज अब 'पिछड़े' की परिभाषा को ध्वस्त कर रहा है।

दोनों की सफलता यह संदेश देती है कि गुर्जर समाज की युवा पीढ़ी केवल खेत की जड़ों से जुड़ी नहीं है, बल्कि शिक्षा और प्रशासन की नई शाखाएँ भी उगा रही है।

खेत से प्रयोग और शिक्षा तक संकल्प

गुर्जर समाज ने कृषि क्षेत्र में भी बार-बार अपना परचम फहराया है।

मंडौरा के वेदव्रत सिंह और कूड़ी के परमाल सिंह ने गन्ना उत्पादन में उत्तर प्रदेश स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया।

गढ़ क्षेत्र के एक गांव के गुर्जर कृषक ने आलू उत्पादन में कीर्तिमान रचकर यह साबित किया कि खेतिहर समाज प्रयोगशीलता में किसी से पीछे नहीं।

अब यही प्रयोगशीलता शिक्षा के क्षेत्र में भी देखने को मिल रही है। खेत में नई किस्म के बीज बोने वाले हाथ अब किताबों में नए विचार बो रहे हैं और परीक्षा कक्षों में सफलता की फसल काट रहे हैं।

समाज की असली जरूरत : प्रथम दृष्ट्या शिक्षा और संस्कार

गुर्जर समाज के लिए आज सबसे बड़ी आवश्यकता है कि वह खेती जितनी ही प्राथमिकता शिक्षा को भी दे।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हर बच्चे तक पहुँचे।

कोचिंग व संसाधन सामूहिक प्रयासों से जुटाए जाएँ।

बेटियों को अवसर बिना किसी भेदभाव के दिया जाए।

प्रेरणादायी उदाहरण जैसे कशिश और अंकित की उपलब्धियों को समाज में प्रचारित किया जाए।

यह पीढ़ी अब समाज को यह विश्वास दिला रही है कि 'हम केवल इतिहास के गौरवगान तक सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि वर्तमान और भविष्य भी गढ़ेंगे।'

निष्कर्ष : कशिश और अंकित की उपलब्धियाँ खेतिहर समाज के लिए आशा के दीपक हैं। यह केवल परीक्षा में सफलता नहीं, बल्कि उस ठप्पे के खिलाफ संघर्ष है, जो समाज को 'पिछड़ा' कहकर परिभाषित करता रहा।

आज यह युवा पीढ़ी घोषणा कर रही है कि -

हम खेत से किताब तक और किताब से राष्ट्र निर्माण तक अपनी पहचान बनाएँगे।

गुर्जर समाज की यह उड़ान आने वाले समय में शिक्षा और कृषि दोनों क्षेत्रों में नई ऊँचाइयों को छुएगी। यही समर्पण, यही श्रम और यही प्रतीज्ञा इस समाज को फिर से अग्रणी बनाएगी।

सहानुभूति : इसमें सच है ताकत दिखावा कमजोरी

आज समाज में पीड़ा देने वाले कारकों की भरमार है और ऐसे में हर कोई चाहता है कि लोग उसकी बात सुनें, उसका दुख-दर्द समझें और उसके साथ खड़े हों। इस लक्ष्य को सिद्ध करने के लिए और हित सिद्धि के लिए इंसान तरह-तरह के तरीके अपनाता है। कहीं कैमरे के सामने मदद बाँटी जाती है, कहीं सोशल मीडिया पर आँसू बहाकर लोगों से सहानुभूति बटोरी जाती है। लेकिन मुख्य प्रश्न यह है कि ऐसे प्रयासों में सत्य क्या और असत्य क्या असर छोड़ पाता है? तो, आइए समझने का प्रयास करते हैं।

सर्वप्रथम तो हम यह जान लें कि सहानुभूति का आधार हमेशा स्वाभाविकता होती है। अगर भाव दिल से निकले हैं, तो सामने वाला उन्हें महसूस कर लेता है, लेकिन अगर सहानुभूति पाने के लिए कृत्रिम माहौल रचा गया है, तो लोग उसे जल्दी पहचान लेते हैं।

सच्चे उदाहरण : प्राकृतिक आपदा आने पर जब कोई व्यक्ति बिना नाम-प्रसिद्धि की परवाह किए पीड़ितों की मदद करता है, तो उसकी ईमानदारी दिल छू जाती है। गाँव का शिक्षक, जो बच्चों को अपनी तनख्वाह से किताबें दिलाता है, समाज की नज़रों में हमेशा आदर पाता है। गांधी और शास्त्री जैसे नेताओं की सादगी और कर्मठता ने उन्हें

स्थायी सहानुभूति दी, क्योंकि उनके जीवन में स्वाभाविकता थी बनावटीपन नहीं था।

छद्म उदाहरण : दूसरी ओर, हम अक्सर देखते हैं कि नेता सिर्फ तस्वीर खिंचवाने आपदा-ग्रस्त इलाकों में पहुँच जाते हैं। सोशल मीडिया पर कुछ लोग बार-बार रोते हुए वीडियो डालते हैं ताकि लोग उन पर तरस खाएँ। कई बार बड़े आयोजनों में केवल औपचारिक शोक संदेश दिए जाते हैं लेकिन असल मदद कहीं नजर नहीं आती। यह सब छद्म सहानुभूति है, जिसका असर कुछ देर का होता है।

निष्कर्ष : यह समझे जाने की जरूरत है कि सहानुभूति मांगने या दिखाने की चीज़ नहीं बल्कि एक स्वाभाविक स्थिति है, जो स्वाभाविक रूप से स्वत: यानि खुद-ब-खुद पैदा होती है और किसी किसी को नहीं अपितु सब ही को समझ भी आती है। अगर भाव सच्चे हैं तो लोग साथ खड़े हो जाते हैं। लेकिन! अगर केवल दिखावा किया जाए तो समय बहुत जल्दी परतें खोल देता है।

वरिष्ठ समाजसेवी देवदूत डेनज़िल नाज़रेथ सहास टीम जाय ऑफ गिविंग से बांट रहे हैं खुशियां

निर्मल हृदय से दान देने से इन्सान स्वस्थ और समृद्धशाली जीवन जीता है -वी बी जैन

वी बी जैन 9261640571 देव चेतना

जयपुर। सहास टीम के वरिष्ठ समाजसेवी देवदूत डेनज़िल नाज़रेथ, सेजल डिडवानिया, टिया और समीर परमार ने गोवा की होली फैमिली सिस्टर्स द्वारा निवारू में संचालित आवासीय छात्रावास आनंद भवन में विकलांग बच्चों की तत्काल आवश्यकताओं का जायजा लेने के बाद सामाजिक जिम्मेदारी के तहत कंबल, लेगिंग वार्मर, कॉपी बुक्स, पेंसिल, पेन, इरेज़र, शार्पनर और स्टेशनरी सामान बांट खुशियां प्राप्त की। आनन्द भवन विकलांग बच्चों की सेवा के लिए आदर्श स्थान है। वरिष्ठ समाजसेवी देवदूत डेनज़िल नाज़रेथ ने कहा कि सहास टीम दिसम्बर के महीने में निरन्तर विकलांग, अनाथों, कुष्ठ रोगियों, गरीबों को जरूरत की वस्तुएं देकर जाय ऑफ गिविंग का असली आनन्द लेने के लिए समाज को प्रेरित करेगी।

सहास टीम जाय ऑफ गिविंग कार्यक्रम में विशेष सहयोग के लिए कलर्स ऑफ होप संस्थापिका यशवर्धिनी चौहान, एलाइन योग फाउंडेशन संस्थापिका मीनाक्षी जयसवाल, वरिष्ठ समाजसेविका बेला शर्मा, वडोदरा के गिल्बर्ट और एलिजाबेथ, अंजलि जैन, सरस्वती पेपरवर्क के डॉ बसंत जैन और मीडिया टाइकून वी.बी. जैन के प्रति आभार व्यक्त किया।

जनशक्ति विकास फाउंडेशन संस्थापक अध्यक्ष, सैल्यूट तिरंगा संगठन राजस्थान सलाहकार, प्रधान संपादक आज मीडिया सर्विस जयपुर वरिष्ठ पत्रकार वी बी जैन ने बताया कि वरिष्ठ समाजसेवी देवदूत डेंजेल नाजरेथ की सहास टीम विकलांग, अनाथों, कुष्ठ रोगियों, गरीबों को जरूरत की वस्तुएं देकर जाय ऑफ गिविंग का असली आनन्द ले रहे हैं। यह शास्त्रोक्त सत्य है कि निर्मल हृदय से दान देने से इन्सान स्वस्थ और समृद्धशाली जीवन जीता है।

ॐ का रहस्य : ब्रह्मांड की पहली ध्वनि

मन को नियंत्रण में रखकर किए गए शब्द-उच्चारण को मंत्र कहा जाता है। मंत्र-विज्ञान हमारे तन और मन दोनों को प्रभावित करता है, इसलिए कहा गया है- 'जैसा मन, वैसा तन।'

मन को शांत और स्थिर रखने का सबसे सरल साधन है- ॐ का जप।

ॐ - तीन अक्षरों का विराट ब्रह्मांड

ॐ तीन ध्वनियों से बना है- अ, उ, म।

अ - सृजन, व्यापकता और उपासना का प्रतीक।

उ - बुद्धि, नियम, सूक्ष्मता और संचालन का संकेत।

म - अनंतता, ज्ञान, पालन और स्थिरता का रूप।

इन तीनों का सम्मिलित अर्थ है- परम सत्ता का सम्पूर्ण रूप, इसलिए इसे सभी मंत्रों का बीज मंत्र कहा गया है।

ब्रह्मांड की पहली ध्वनि

पुराण कहते हैं कि सृष्टि के प्रारंभ में जो पहली अनाहत ध्वनि गूंजी वह थी- ॐ

यह ध्वनि किसी टकराव से नहीं बनी, बल्कि स्वयं ब्रह्मांड की गति और ऊर्जा से उत्पन्न हुई।

ध्यान की गहन अवस्था में साधक आज भी इस अनहद नाद को सुनते हैं और इसे परम शांति का स्रोत बताते हैं।

आध्यात्मिक रहस्य : ओम् का जप मन को शुद्ध करता है। व्यक्ति को परमात्मा के निकट लाता है। साधना में स्थिरता, मौन और अंतरात्मा की जागृति बढ़ाता है। ईश्वर की अनुभूति हेतु यह सबसे सरल मार्ग माना गया है।

इसलिए हर मंत्र की शुरुआत ॐ से होती है।

ॐ नमो नारायण। ॐ नमः शिवाय। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय, आदि।

ॐ के वैज्ञानिक लाभ : मंत्र का उच्चारण केवल धार्मिक क्रिया नहीं, बल्कि वैज्ञानिक कंपन है।

ओम् का उच्चारण शरीर के विभिन्न हिस्सों- जीभ, तालू, कंठ, फेफड़ों और नाभि- में कंपन पैदा करता है, जो सीधे ग्रंथियों और चक्रों को सक्रिय करता है।

प्रमुख लाभ :

1. तनाव दूर करता है, शरीर पूरी तरह रिलैक्स होता है।
2. घबराहट और अधीरता कुछ ही मिनटों में गायब होती है।
3. शरीर में फैले विषाक्त तत्वों का संतुलन बनाता है।
4. हृदय और रक्तसंचार को नियमित करता है।
5. पाचन शक्ति तेज होती है।
6. शरीर में युवावस्था जैसी ऊर्जा लौट आती है।
7. थकान दूर होती है।
8. अनिद्रा का श्रेष्ठ उपचार- नींद आने तक मन ही मन इसका जप करें।
9. कुछ प्राणायाम के साथ करने पर फेफड़ों की क्षमता बढ़ती है।

वास्तु और मानसिक ऊर्जा पर प्रभाव

वास्तुविद मानते हैं कि घर में अक्सर जप किया जाए तो नकारात्मक ऊर्जा दूर होती है, वातावरण शांत होता है, मनोवैज्ञानिक तनाव हटता है। प्रिय शब्दों से सकारात्मक हार्मोन बनते हैं, अप्रिय शब्दों से विषैले रसायन। इसलिए ॐ की शांत लय मन, मस्तिष्क और हृदय पर अमृत की तरह काम करती है।

108 बार जप क्यों ?

कम से कम 108 बार ॐ का उच्चारण करने से शरीर तनावमुक्त हो जाता है। ऊर्जा का प्रवाह बढ़ता है। प्रकृति के साथ तालमेल बनता है। परिस्थितियों का पूर्वानुमान करने की क्षमता बढ़ती है। व्यवहार में शालीनता और धैर्य आता है। निराशा, उदासी और आत्महत्या जैसे विचार दूर होते हैं। बच्चों में पढ़ाई का मन न लगे या स्मरण शक्ति कमजोर हो नियमित ओम् जप से अद्भुत लाभ मिलता है।

उच्चारण की सही विधि :

प्रातः स्नान के बाद शांत वातावरण में बैठें।

मुद्रा : पद्मासन, अर्धपद्मासन, सुखासन या वज्रासन।

जितनी बार समय मिले- 5, 7, 10 या 21 बार।

पहले 'ओ' को लंबा खींचें, अंत में 'म' हल्की गूंज की तरह। जप माला से भी कर सकते हैं।

निष्कर्ष : ॐ केवल एक मंत्र नहीं- यह आत्मा का संगीत है, ब्रह्मांड की धड़कन है। यह वह ध्वनि है जो हमें प्रकृति, ऊर्जा, चेतना और ईश्वर से जोड़ती है।

जो इसे नियमित करता है, उसके जीवन में शांति, स्थिरता, स्फूर्ति और दिव्यता स्वयं उतर आती है।

हमारी बृज यात्रा की कुछ स्मृतियां

आप भी आंनद लिजिए।

इतनी सुखद यात्रा रही वृन्दावन, की जिसको शब्दों में बयान नहीं, किया जा सकता, वो सिर्फ महसूस किया जा सकता है,

जैसे सारी नदियाँ चारों तरफ से आ,आ,कर समुद्र में मिलती है वैसे ही, हम सभी यात्रीगण अलग-अलग जगह से आकर, वृन्दावन में लाला बद्रीप्रसाद आश्रम में आकर इकट्ठे हुए क्योंकि भागवत जी का भी आयोजन था,

और ब्रज यात्रा भी करनी थी, हमने पहले से ही गाड़ियां बुकिंग कर ली थी, पहले दिन तो कलश यात्रा निकालनी थी,

दुसरे दिन सुबह सात बजे से गाड़ियां आ जाती, पहले दिन हम मधुबन,कृष्ण कुंड, और जतीपूरा गये ,जतिपूरा में मुखार बिंद के दर्शन किए दूध से अभिषेक किया गोवर्धन जी का, गोवर्धन परिकम्मा न्यारी,आते है लाखो नर-नारी,

कोई पैदल पैदल जाए, कोई दुध की धार चढ़ाए,

फिर पुंछरी का लोठा,और दान घाटी,उसके बाद, राधा-कृष्ण कुंड, कुसुम सरोवर, मानसी गंगा और बाद में बरसाना राधारानी के गांव, सब भक्त जहां भक्ति की धारा में बहते हैं,

झूमती द्वार पर दुनियाँ सारी चारों तरह राधा राधा नाम गुंज रहा होता है, प्रेम सरोवर, नंदगांव, नंदनवन, फिर आसेश्वर महादेर मन्दिर

जहां महादेव कृष्ण दर्शन की आस लेकर नंदगांव आते है, उसके बाद टेर कदंब जहां कान्हा जी बाँसुरी की टेर से सब गैया का नाम ले, ले कर बुलाते थे।

किशोरी कुंड, शनिदेव मन्दिर, फिर चारधाम यात्रा करी, जब नंद बाबा और यशोदा मैया के संतान नही थी तब उन्होंने मन्नत मानी थी चारधाम यात्रा की।

जब कान्हा से कहा हमे चारधाम जाना है मन्नत पूरी करनी है तब कान्हा जी सोचते है इनका बुढ़ापा है इतनी दूर कैसे जाएंगे।

तब चारधाम वही बनवा लिए थे, गंगोत्री, यमुनोत्री बद्रीनाथ, केदारनाथ, हमने भी चारधाम यात्रा की।

हमारी वृन्दावन यात्रा का आगे का वृतांत।

मैंने आपको बताया था ना नंद बाबा और यशोदा मैया ने मन्नत मानी थी, चार धाम यात्रा करेंगे अगर संतान हो जाएगी तब। तो कन्हैया जी उनके लिए चार धाम बृज चौरासी मे ही बना देते है,वो हमने भी दर्शन किये,

फिर आगे हमने चरण पहाड़ी, भस्मासुर की गुफा,

भोजन थाली, दुध कटोरे, के दर्शन कर के आगे,

मानसरोवर जहां राधा रानी रुठ कर बैठ जाती थी

और कान्हा जी उन्हें मनाते थे मान जाओ मानिनी श्री राधे।

आगे बेल वन, और मधुबन, उसके बाद भांडीर वन,

जहां पर राधा-कृष्ण की शादी ब्रम्हा जी ने करवाई थी

इतनी सुन्दर मूर्तियाँ है कहीं पर अग्निकुण्ड में आहूति डाल रहे कही राधा जी की मांग भर रहे हैं,

आगे दाऊदयाल जी का मन्दिर है और रमणरेती, उस रेत पर लोग लोटते हैं मक्खन जैसी मुलायम रेत, उस पर चलने से पैरों की थकान उतर जाती है, फिर बछू बन और निधिवन।

जहां कान्हा जी ने महारास रचाई थी, चिरघाट जहां गोपियों के चिर हरण किये थे, फिर कात्यायनी माता के दर्शन किये, गुंजन वन, बाकें बिहारी जी मन्दिर, और गोपेश्वर महादेव मन्दिर, इसके बाद हमने कृपालु जी महाराज ने जो प्रेम मन्दिर बनाया वहां भी गए थे बहुत सुंदर झांकियां है।

ये गिरिराज धरण का कहना, राधे नाम को जपते रहना,
पहनों भक्तिभाव का गहना, गा, गा, के यही कहना है,
मेरे बृज की माटी चंदन है, गिरधारी जहां रहते है।

– प्रमिला त्रिवेदी

देश और प्रदेश सरकार से गौ सेवकों की करुण पुकार

गोचर भूमि में निर्भयता से,
हो गोमाता का वास।
तो हो जाए सम्पूर्ण देश में,
सुख समृद्धि का वास।।

कार्य एक,लाभ अनेक। हे लोक कल्याणकारी सरकार!! गोमाता के लिए पुरखों द्वारा हजारों वर्ष पूर्व से संरक्षित रखी गई गोचर भूमि को अब 11नवंबर 2025 से शुरू हुए अभियान मे विलायती बबूल के साथ साथ अतिक्रमण से भी मुक्त कराकर तारबंदी से सुरक्षित कर गोवंश के सुपुर्द कर दीजिये? आपके इस एक नेक कार्य से अनंत समस्याओं का स्वत: ही समाधान हो जाएगा। सभी का लोक के साथ परलोक भी संवर जाएगा द्य हे सनातन धर्म संस्कृति की सजग प्रहरी सरकार!! गोमाता की कृपा से आप अनेक बार से केंद्र व राज्यों मे सत्ता में है, अब आप भी गोमाता को उसकी गोचर भूमि मे स्थाई निवास की व्यवस्था कर सुखपूर्वक बसाने की कृपा कर दो? यह कार्य यदि अब भी नहीं हुआ तो आगे कभी होने की आशा रखना ही व्यर्थ है द्य अत: अब आप किसी वोट नुकसान आदि के भय से इस नेक कार्य के कदम से पीछे मत हटना, क्योंकि आपके इस नेक कार्य से गाँव के 100 लोगों मे से 10 अतिक्रमि आपसे नाराज होंगे तो बाकि 90 अच्छे लोग आपसे खुश भी होंगे द्य गौमाता की कृपा से आपका किसी तरह का कोई नुकसान नहीं होगा द्य गौमाता स्वयं भले ही वोट न देती हो लेकिन भगवान की भी भगवान होने के कारण खूब वोट दिलाकर राजपाट संभला देती है।

हर पंचायत मे गोचर भूमि मे कम से कम एक गौशाला संचालित हो जाए तो देश मे एक भी गोवंश सड़क पर भूखा भटकते हुए न तो फसलों को नष्ट करें और न टकराकर खुद मरे और न ही राहगीरों को मारे। अरबों खरबो से बन रही लम्बी चौड़ी चमचमाती सड़कों पर गोवंश के कारण आये दिन घटित हो रहे हादसों मे हर वर्ष हजारों परिवारों को अकाल मृत्यु का ग्रास भी नहीं बनना पड़े। किसानों को हर वर्ष फसल रखवाली के लिए हजारों रूपये तारबंदी पर भी ख़र्च नहीं करना पड़े और न ही फसल रखवाली के लिए रात दिन टॉर्च और डंडा लेकर दौड़ना पड़े और न ही गोमाता को प्रताड़ित करने का पाप करना पड़े द्य राम कृष्ण, ऋषि मुनियों, समस्त लोकदेवताओं व पुरुखों द्वारा आँगन मे सेवित -पूजित प्यारी गोमाता को आजकल के पढ़े-लिखे- विकासवादी किसानों द्वारा कई गाँवों मे तो श्मशान घाट जैसी जगह की चारदिवारी मे कैद करने का महापाप भी नहीं करना पड़े।

गधा घोड़ा ऊँट भैंस भेड़ बकरी सबके धणी धोरी है केवल एक गौवंश ही बेसहारा भूखा भटकता है जिससे बचाव के लिए तारबंदी की जाती है जिस पर हर गाँव मे कम से कम एक करोड़ रूपये सरकारी सब्सिडी के और एक करोड़ रूपये ही किसानों के खर्च होते है, और फिर भी रखवाली के लिए किसानों को रात दिन टॉर्च और डंडा लेकर दौड़ना पड़ता है।

सरकार प्रति खेत इस तारबंदी सब्सिडी खर्च के बजाय यदि इसके एक चौथाई रूपये से भी गोचर भूमि को तारबंदी से सुरक्षित कर गोवंश के सुपुर्द कर दे तो गोवंश उसमें सुख शांति से जी लें, ईश्वर उन्हें उनकी उस गोचर भूमि मे ही चारा, पानी, छाया सब दे देगा, बस आप तो गोमाता को उसकी गोचर भूमि दे दो?

युगों युगों से जगत उपकारिणी रही गोमाता के गोचर भूमि मे सुख पूर्वक निवास के बिना इस देश के विकास व सुख समृद्धि के प्रयास करना उसी तरह व्यर्थ है जैसे राख मे हवन करना व्यर्थ है।

अत: हर पंचायत स्तर पर गोचर भूमि मे कम से कम एक गौशाला संचालित हो जाए तो सभी समस्याओं का स्वत: समाधान हो जाए, गौमाता सुखी हो जाए और उसके आशीर्वाद से जनता सुरक्षित, सुखी व समृद्ध हो जाए।

सबको सन्मति दे भगवान। – ***महावीर बडियावल***

डॉ. अम्बेडकर चिन्तन के विविध आयाम और उनकी प्रासंगिकता विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी महापरिनिर्वाण दिवस पर सम्पन्न

राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना की 278वीं राष्ट्रीय संगोष्ठी डॉ. अम्बेडकर चिन्तन के विविध आयाम और उनकी प्रासंगिकता विषय पर वक्ताओं ने अपने विचार संविधान निर्माता के महा परिनिर्वाण दिवस पर व्यक्त किये।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के मुख्य वक्ता एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. शैलेन्द्रकुमार शर्मा ने सम्बोधन में कहा कि डॉ. अम्बेडकर सामाजिक न्याय के पुरोधा के रूप में जाने जाते है। भारत में सामाजिक न्याय की बात की जाय तो वो वर्षों पहले प्रारम्भ हो गई थी। कबीर, रविदास, चोखेमाला, ज्योतिबा फूले, सावित्री बाई फूले, रानाडे, बाबासाहेब अम्बेडकर, संत गाडगे आदि सभी ने समाज को एकरस बनाने का अथक प्रयास किया। डॉ. अम्बेडकर और सामिजिक न्याय को समझने से पूर्व सामाजिक न्याय है क्या इसको समझते हैं- अगर सामान्य अर्थों में देखे तो सामाजिक न्याय समाज के अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड़े वर्गों मजदूरों तथा महिलाओं को समाज में बराबरी का हक मिले इसे ही सामाजिक न्याय कहा जाता है सामाजिक न्याय शब्द सर्वप्रथम सन् 1840 में सिसली के पादरी द्वारा प्रयोग में लाया गया था। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जब सामाजिक न्याय शब्द प्रसिद्ध हुआ तो सबसे पहले कृषि क्षेत्र से स्थानान्तरित मजदूर वर्ग के लिए ये प्रयुक्त हुआ कि आम जनता की आवश्यकताओं पर ध्यान देने के लिए शासक वर्ग से एक अपील के रूप में इस्तेमाल किया गया। सामाजिक न्याय का मूल आधार है समाज के वंचित, शोषित और दीन-हीन वर्गो का उत्थान। इसका प्रमुख उद्देश्य मानव जाति को सामाजिक व आर्थिक शोषण एवं भेदभाव की पारम्परिक जकड़न से मुक्त कराना है।

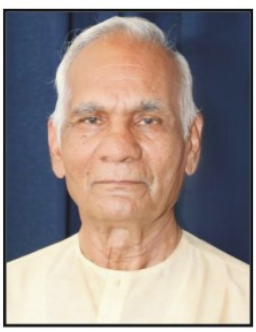

विशिष्ट वक्ता एवं राष्ट्रीय संगठन महामंत्री डॉ. प्रभु चौधरी ने बताया कि बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर बीसवीं शताब्दी के महान शिक्षाविद् एवं सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत नेता रहे है। भारतरत्न डॉ. अम्बेडकर जी बुद्धिजीवी, विद्वान तथा राजनीतिक व्यक्ति थे। आपका देश के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। भारत के संविधान निर्माण के लिये संविधान प्रारूप समिति में अध्यक्ष के रूप में रहे। वे सामाजिक न्याय के संघर्ष के प्रतीक है।

संगोष्ठी के शुभारम्भ में सरस्वती वंदना संचालक श्रीमती श्वेता मिश्रा ने प्रस्तुत की। संगोष्ठी की प्रस्तावना राष्ट्रीय महासचिव डॉ. शहेनाज शेख ने वक्तव्य में कहा कि डॉ. अम्बेडकर ने शिक्षा, समानता और प्रेम का संदेश दिया। उन्होंने दलित, शोषित एवं महिलाओं को अन्य लोगो की तरह समान ही कानूनी अधिकार दिलाने के लिए अनेक आंदोलनों का नेतृत्व किया और समाज के लोगो को मानवाधिकार दिलाए। विशिष्ट अतिथि श्री हरेराम वाजपेयी अध्यक्ष हिन्दी परिवार इन्दौर ने डॉ. अम्बेडकर जी के कार्यों की सराहना की। राष्ट्रीय संयोजक श्री पदमचंद गांधी जयपुर, ने अध्यक्षीय भाषण दिया। समारोह में राष्ट्रीय अध्यक्ष महिला डॉ. अनसूया अग्रवाल, राष्ट्रीय मुख्य प्रवक्ता डॉ. रश्मि चौबे गाजियाबाद, श्रीमती अंशु जैन देहरादून, श्रीमती सुवर्णा जाधव, डॉ. सुषमा कोंडे पुणे, डॉ. जया सिंह रायपुर, डॉ. आनन्दी सिंह लखनऊ, डॉ. हरिसिंह पाल नई दिल्ली, श्रीमती माया मेहता मुम्बई, श्रीमती कामिनी श्रीवास्तव लखनऊ आदि ने भी डॉ. भीमराव अम्बेडकर पर उद्बोधन दिया। संगोष्ठी का सफल संचालन श्रीमती श्वेता मिश्रा ने किया एवं आभार सुश्री रंजना पांचाल मध्यप्रदेश महासचिव ने माना।

- डॉ. हरीशकुमार सिंह, राष्ट्रीय प्रवक्ता
राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना, केन्द्रीय कार्यालय उज्जैन

जगरौटी विमेंस कॉलेज में एड्स जागरूकता कार्यक्रम हुआ आयोजित

वी बी जैन 9261640571 देव चेतना

महुआ। जगरौटी विमेंस कॉलेज खेड़ला बुजुर्ग में विश्व एड्स दिवस पर एनएसएस की स्वयंसेविकाओं तथा महाविद्यालय की छात्राओं ने मानव श्रृंखला बना एड्स जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया।

इस अवसर पर संस्था निदेशक डॉ कुलदीप सिंह प्राचार्य डॉ मंजू सिंह ने विद्यार्थियों को विश्व एड्स दिवस के बारे में जानकारी दी तथा विद्यार्थियों ने भी अपने विचार व्यक्त किया कार्यक्रम में एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी सपना कुमारी, ज्योतिष्ण यादव, प्रभारी बबलेश कटारा, सोनवीर चौधरी, जगदीश सिंह, साधुराम, बाबू सिंह, राजेंद्र मीणा ने भाग लिया।

यूनिवर्सल टीटी कॉलेज बाल दिवस समारोह

हंसमुख थे आधुनिक भारत के निर्माता पं. चाचा नेहरू -डॉ. कुलदीप सिंह

वी बी जैन 9261640571 देव चेतना

महुवा। यूनिवर्सल टीटी कॉलेज महुवा में भारत के प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में बाल दिवस मनाया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान निदेशक डॉ. कुलदीप सिंह, प्राचार्य डॉ सतीश चन्द शर्मा एवं मुख्य अतिथि राम कुमार चौधरी ने नेहरू जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर किया। इस अवसर पर डॉ. कुलदीप सिंह ने कहा कि आधुनिक भारत के निर्माता पण्डित जवाहर लाल नेहरू हसमुख स्वभाव के थे जो बच्चों सहित सभी को प्रिय थे।

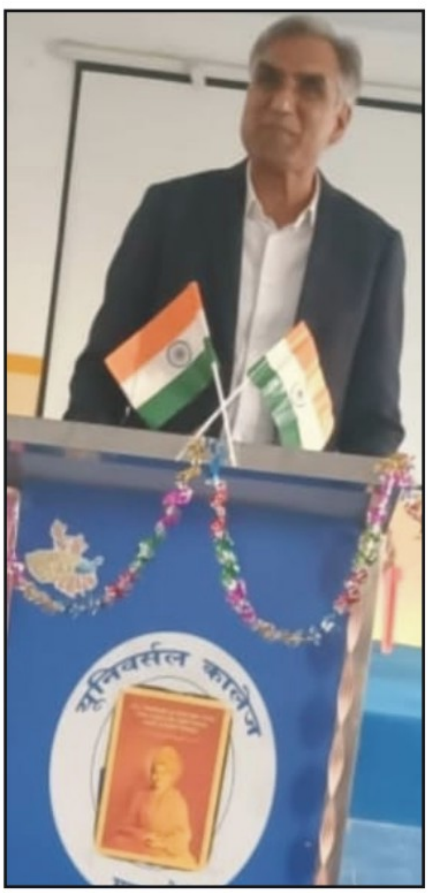

नेहरू जी को गुलाब का फूल बहुत प्रिय था। नेहरू जी ने भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए भाखड़ा नांगल बांध, बड़े कल कारखाने, चिकित्सा और शिक्षण संस्थानों की स्थापना की। गुटनिरपेक्ष विदेश नीति, समाजवाद एवं राजनीतिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। मुख्य अतिथि राम कुमार चौधरी ने बाल दिवस की शुभकामनाएं देते हुए उपभोक्ता जागृति के विषय पर भी प्रकाश डाला। इसी संदर्भ में प्राचार्य डॉ सतीश चन्द शर्मा ने भी जवाहरलाल नेहरू जी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। छात्र जनक सिंह ने नेहरू जी के व्यक्तित्व पर कविता के माध्यम से प्रकाश डाला तथा चिंटू और धर्मेंद्र ने भी नेहरू जी के बालकों के प्रति प्रेम से संबंधित चर्चा की तथा छात्रा अंजलि जांगिड़ ने चाचा नेहरू के बचपन के स्वरूप को बताते हुए विचार व्यक्त किए। मंच संचालन प्रवक्ता अनुराग शर्मा ने किया तथा प्रवक्ता भवानी शंकर, मीना शर्मा, कोमल शर्मा सहित प्रशिक्षणार्थी गण ने समारोह में भाग लिया।

कैबिनेट के फैसलों पर फोर्टी का मंथन

नए विभाग से प्रदेश के विकास में प्रवासी राजस्थानियों की भागीदारी बढ़ेगी- सुरेश अग्रवाल

वी बी जैन 9261640571 देव चेतना

जयपुर। राजस्थान में अब अलग से प्रवासी राजस्थानी विभाग होगा। इसकी घोषणा सरकार ने बजट में कर दी थी, लेकिन इस पर बुधवार को भजनलाल सरकार की कैबिनेट ने मुहर लगा दी।

अब प्रदेश में प्रवासी राजस्थानी विभाग का रास्ता साफ हो गया है। फेडरेशन ऑफ राजस्थान ट्रेड एंड इंडस्ट्री (फोर्टी) कार्यालय में कैबिनेट के फैसलों की समीक्षा की गई। इसमें अध्यक्ष सुरेश अग्रवाल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष राकेश गोयल, वुमन विंग अध्यक्ष नीलम मित्तल, ईसी मेम्बर पारुल भार्गव, यूथ विंग अध्यक्ष सुनील अग्रवाल,सचिव प्रशांत शर्मा शामिल हुए। फोर्टी अध्यक्ष सुरेश अग्रवाल का कहना है कि सरकार के पास प्रवासी राजस्थानियों के साथ समन्वय और सामंजस्य के लिए उचित मंच नहीं था। अब प्रदेश में अलग से प्रवासी विभाग बनने से प्रदेश के समग्र उत्थान में प्रवासी राजस्थानियों का विधिवत रूप से सहयोग लिया जा सकेगा।

फोर्टी का सुझाव है कि प्रवासी विभाग का जो भी मंत्री और अधिकारियों को जिम्मेदारी सौंपी जाए, उसके पास पहले से ही विभागों का भार ना हो अन्यथा इस विभाग की जिम्मेदारियों के साथ न्याय नहीं हो पाएगा। वुमन विंग प्रेसिडेंट नीलम मित्तल ने कैबिनेट के फैसले की सराहना करते हुए कहा कि 2030 तक प्रदेशभर में 2 सौ कैपेबिलिटी सेंटर खोलने की योजना से प्रदेश के युवाओं को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे। फोर्टी यूथ विंग अध्यक्ष सुनील अग्रवाल का कहना है कि भजनलाल कैबिनेट की ओर से उद्योगों को 10 करोड़ तक की सब्सिडी स्वागत योग्य है, लेकिन अभी यह स्पष्ट नहीं है कि यह नए उद्योगों के लिए ही है या पुराने उद्योगों को भी इसका लाभ दिया जाएगा। सरकार को पुराने उद्योगों के अपग्रेडेशन के लिए सब्सिडी का लाभ देना चाहिए।

आरबीआई की रेपो रेट में कटौती से होम, कार व अन्य रिटेल लोन होंगे सस्ते -फोर्टी

उपभोक्ताओं तक पहुंचे रेपो रेट कटौती का पूरा लाभ -सुरेश अग्रवाल

वी बी जैन 9261640571 देव चेतना

जयपुर। भारतीय रिजर्व बैंक ने मौद्रिक नीति की समीक्षा बैठक में देश के रिटेल उपभोक्ताओं को बड़ी राहत देने का फैसला लिया। आरबीआई एमपीसी की तीन दिवसीय बैठक में आरबीआई गवर्नर संजय मल्होत्रा ने बैठक में लिए गए फैसलों की घोषणा की। इसमें आरबीआई ने रेपो रेट को 0.25 प्रतिशत कम किया है। इस कटौती के बाद आरबीआई की रेपो रेट 5.25 प्रतिशत पर आ गई है। इस साल चौथी बार आरबीआई ने रेपो रेट कम की है। इस तरह से साल भर में कुल मिला कर 1.25 प्रतिशत रेपो रेट में कटौती की गई है। फैडरेशन ऑफ राजस्थान ट्रेड एंड इंडस्ट्री (फोर्टी) ने आरबीआई के इस फैसले का स्वागत किया है। फोर्टी अध्यक्ष सुरेश अग्रवाल प्रतिक्रिया दी कि रेपो रेट कम होने से कमर्शियल बैंकों के पास एक्सट्रा लिक्विडिटी होगी। इससे होम, कार और अन्य लोन की ब्याज दरों में कमी आने की संभावना है। जिससे रियल एस्टेट, ऑटोमोबाइल और अन्य सेक्टर्स में डिमांड बढ़ेगी और बाजार को बूस्ट मिलेगा। इससे भारतीय अर्थव्यवस्था की गति और तेज होगी। आरबीआई को इस बात पर भी ध्यान देना होगा कि रेपो रेट में कटौती से बैंकों को होने वाला लाभ उपभोक्ताओं तक भी पहुंचे, क्योंकि बैंक कई बार रेपो रेट कटौती के पूरे लाभ को उपभोक्ताओं तक नहीं पहुंचाते हैं।

देव चेतना पत्रिका के मुख्य संरक्षकगण

श्री आर.के. अग्रवाल
मुख्य संरक्षक

श्री बालाराम पोसवाल
मुख्य संरक्षक

प्रधान एम.सी. छोकर
गुर्जर समाज कल्याण परिषद, पंचकूला

श्री हरिनारायण बारवाल
जयपुर
मुख्य संरक्षक

वृद्धिचन्द गुर्जर
उपाध्यक्ष
राज. गुर्जर महासभा

श्री रवि लोमोड़
मुख्य संरक्षक

श्री बाछूराम डोई
जयपुर
मुख्य संरक्षक

श्री पदमसिंह कसाना
मुख्य संरक्षक

श्री भँवरसिंह धाभाई
बीबासर-झुंझुनूं
मुख्य संरक्षक

देशराज गुर्जर
पारी, चित्तौड़
मुख्य संरक्षक

श्री देवनारायण धाभाई
मुख्य संरक्षक

गिर्राज पोसवाल
मुख्य संरक्षक

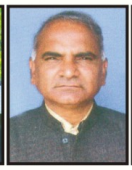
डॉ. रामकुमार सिराधना
मुख्य संरक्षक

श्री राम मणगस
मुख्य संरक्षक

श्री जीवनराम मावरी
मुख्य संरक्षक

श्री छीतरलाल कसाना
मुख्य संरक्षक

श्री मुकेश सिन्धु
मुख्य संरक्षक

श्री संदीप नरसल
मुख्य संरक्षक

जगदीश लोहिया दिल्ली
मुख्य संरक्षक

श्री रामपाल फागणा
मुख्य संरक्षक

श्री चेतन डोई
मुख्य संरक्षक

श्री श्रवणलाल चाड़
मुख्य संरक्षक

श्री शंकरसिंह बजाड़
मुख्य संरक्षक

मनीष भरगड़
मुख्य संरक्षक

श्री रामफूल डोई
मुख्य संरक्षक

श्री शैतान सिंह अवाना
मुख्य संरक्षक

श्री अखिल अवाना
मुख्य संरक्षक

श्री महेन्द्र सिराधना
मुख्य संरक्षक

श्री नीमसिंह गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री देशराज चौहान
मुख्य संरक्षक

श्री दुष्यन्त सिंह तोमर
मुख्य संरक्षक

श्री रामधन चेची
मुख्य संरक्षक

श्री विनोद उमरवाल
मुख्य संरक्षक

श्री संजय सिंह गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री दिनेश कसाना
मुख्य संरक्षक

श्री ओमप्रकाश जांगल
मुख्य संरक्षक

राजू अमावता
मुख्य संरक्षक

श्री मुकेश सुकल
मुख्य संरक्षक

श्री महेन्द्र सिंह चेची
मुख्य संरक्षक

श्री मंगल सिंह गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री नन्दलाल गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री श्रवण लाल गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री नवरतन बारवाल
मुख्य संरक्षक

श्री राजेन्द्र फागणा
मुख्य संरक्षक

श्री प्रेमसिंह अवाना
मुख्य संरक्षक

श्री बीरबल प्रसाद
मुख्य संरक्षक

श्री ओमप्रकाश भड़ाना
मुख्य संरक्षक

श्री मंगलाराम खटाणा
मुख्य संरक्षक

श्री पुरुषोत्तम कसाना
मुख्य संरक्षक

श्री सीताराम कसाना
मुख्य संरक्षक

श्री राधेश्याम छावड़ी
मुख्य संरक्षक
न.पा. चेयरमैन-मण्डावा

श्री फूलचन्द बैंसला
मुख्य संरक्षक

डॉ. बी.एल. गोचर
मुख्य संरक्षक

श्री रामपाल सिंह लोमोड़
मुख्य संरक्षक

श्री राजेन्द्र सिंह दांता
मुख्य संरक्षक

एडवोकेट शैलेन्द्र धाभाई
मुख्य संरक्षक

श्री मोतीलाल गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री शंकरलाल छावड़ी
मुख्य संरक्षक

श्री हनुमान गुर्जर गरणिया
मुख्य संरक्षक

श्री महेश धाभाई
मुख्य संरक्षक

श्री रामगोपाल गुर्जर नेकाड़ी
मुख्य संरक्षक

श्री लालचन्द आरोलिया
मुख्य संरक्षक

श्री रघुनाथ गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री एच.आर. कपासिया
फरीदाबाद, मुख्य संरक्षक

श्री रामधन डोई
जयपुर मुख्य संरक्षक

श्री प्रमोद तँवर
जयपुर मुख्य संरक्षक

श्री रामप्रकाश धाभाई
मुख्य संरक्षक

श्री कैलाश गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री विनोद कसाणा
मुख्य संरक्षक

महन्त मंगलनाथ जी
मुख्य संरक्षक

मोहनलाल सराधना
भीलवाड़ा, मुख्य संरक्षक

प्रकाश चन्द पोसवाल
सीकर, मुख्य संरक्षक

हरिराम डोई
मुख्य संरक्षक

श्री राजेन्द्र बसवा
मुख्य संरक्षक

श्री दुर्गाशंकर बारवाल
मुख्य संरक्षक

श्री त्रिभुवन सिंह पंवार
मुख्य संरक्षक

श्री उगमा राम गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री नानगराम कसाना
मुख्य संरक्षक

श्री शंकर लाल गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री देवेन्द्र सिंह गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री देवी लाल गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री इन्द्रमल गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री शंकर लाल गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री गोपाल गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री हरीश चन्द्र भाटी
मुख्य संरक्षक

श्री मोहनलाल गुर्जर
रायड़ा, मुख्य संरक्षक

श्री लक्ष्मण गुर्जर
मुख्य संरक्षक

श्री ललित गुर्जर चौहान
भीलवाड़ा, मुख्य संरक्षक

DEV CHETNA Pub. Date : 5 December, 2025 Postal Reg. No. IR/ JaipurCity/ 426/ 2025-27
RNI No. RAJHIN/2013/50503 Posted Date : 11th December, 2025

'यथार्थ गीता' सद्गुरु स्वामी अड़गड़ानंद जी महाराज का कृपा प्रसाद

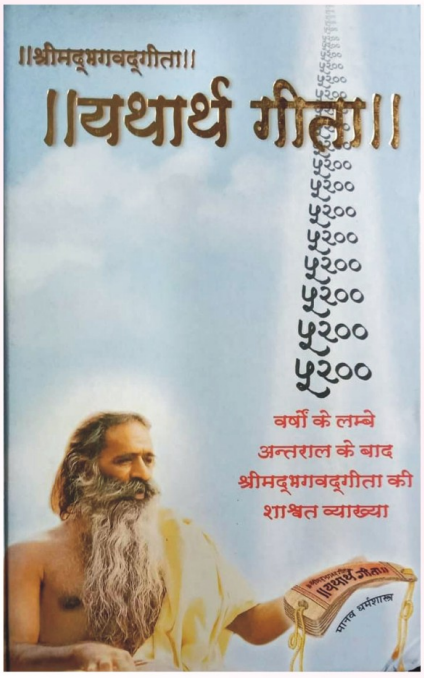

सद्गुरुदेव परमानंद परमहंसजी महाराज अनसूया आश्रम चित्रकूट के शिष्य स्वामी अड़गड़ानंद जी महाराज को यथार्थ गीता अपने गुरुदेव की कृपा प्रसाद के रूप में वैश्विक मानव मात्र के कल्याण के लिए प्राप्त हुई। ऐसा स्वामी जी का कथन है। गुरु कृपा प्रसाद को स्वामी जी ने मानवमात्र के कल्याण के लिए यथार्थ गीता के रूप में प्रकाशित किया है।

वर्षों के लंबे अंतराल के बाद श्रीमद्भागवत गीता की शाश्वत व्याख्या 'यथार्थ गीता' मानव धर्मशास्त्र है।

दिल्ली फरीदाबाद प्रवास के दौरान सद्गुरुदेव स्वामी श्री अड़गड़ानंदजी के फरीदाबाद स्थित आश्रम में शैतान सिंह गुर्जर, वीरेंद्र चंदीला के साथ जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सद्गुरुदेव स्वामी श्री अड़गड़ानंद जी के प्रत्यक्ष दर्शन करने से प्रसन्नता और शांति प्राप्त हुई। सद्गुरुदेव को देव चेतना मासिक पत्रिका एवं जेएनयू यूनिवर्सिटी में प्रस्तुत शोध पत्र की प्रतिलिपि भी भेंट की। उन्होंने देव चेतना मासिक पत्रिका का अवलोकन किया। इससे पूर्व भी वैशाली नगर, जयपुर स्थित राजकुमार अग्रवाल जी ने स्वामी श्री अड़गड़ानंद जी को देव चेतना मासिक पत्रिका का बगड़ावत भारत लोकवार्ता विशेषांक एवं यथार्थ गीता पर प्रकाशित अंक भेंट किया था। गुरुदेव के आश्रम से सद्गुरुदेव स्वामी श्री अड़गड़ानंद जी के कृपा प्रसाद रूप 'यथार्थ गीता' की पुस्तक प्राप्त हुई है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक **मोहन लाल वर्मा** के लिये स्काईटैक प्रिन्टर्स, 10, बोराज ठाकुर का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर (राज.) से मुद्रित एवं म.नं. 3714, कालों का मोहल्ला, कुन्दीगर भैरूं का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। सम्पादक : **मोहन लाल वर्मा**
मो. 9782655549 E-mail: devchetnanews@gmail.com